"या जग अन्धा कहो किसको समझाऊ"

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश फरवरी 1971 में प्रकाशित सत्संग प्रवचन)

अभी आपने कुछ शब्द सुने, अब कबीर साहब का एक शब्द आपके सामने रखा जाएगा। गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं -

या जग अन्धा कहो कैसे मैं समझाऊं।

दुनिया को जिस नजर से आम लोग देखते हैं, वह कुछ और रंग में नजर आती है। मगर एक ऐसी हस्ती, जिस की आत्मा ने अपने आप को मन-इन्द्रियों से आजाद कर लिया है, और अपने आपको जान लिया है, और प्रभु का अनुभव कर चुकी है, वह इसी दुनियां को और किसी Angle of vision (दृष्टिकोण) से देख रहे हैं। वह यह देख रहे हैं कि आम दुनिया की आत्मा, मन के आधीन हो कर, इन्द्रियों के घाट पर, जिसम का रूप बनी बैठी है। वह इस जिसम के साथ इतनी Identify (लम्पट) हो चुकी है कि अब इसको यह तमीज करना भी मुश्किल हो गया है, कि मैं जिसम हूँ या इसके चलाने वाली हूं, मैं यह मकान हूं या मकान का मकीन (निवासी) हूं। उसकी आँख स्थूल इन्द्रियों द्वारा बाहरी दुनिया को देख रही है। अन्तर की आँख अभी नहीं खुली। जितना बाहरमुखी ज्ञान है, यह सब दृश्य का ज्ञान हैं जिसका ताल्लुक स्थूल इन्द्रियों से है। इसको इन्द्रियों का घाट छोड़ना नहीं आया, यह बाहर की दुकान इस की बन्द नहीं हुई, अन्तर की दुकान खुली नहीं, इसकी आत्मा कभी पिण्ड से ऊपर नहीं आई, स्थूल देह से इस का कभी छुटकारा नहीं हुआ, इसने इस जिसम से कभी Rise above नहीं किया, अन्तर सूक्षम जिसम में जो सूक्षम इन्द्रियां हैं, वह अभी तक नहीं खुली। तो हमें क्या करना चाहिये ? मौलाना रूम साहब कहते हैं -

ईं दुकां बरबन्दो बिकुशा आं दुकाँ

ऐ भाई, तू बाहर की दुकान को बन्द करना सीख और अन्तर की दुकान को खोलना सीख। जिनकी अन्तर की दुकान खुल चुकी है उन की आँख सूक्षम भी बन चुकी है। वह सूक्षम चीज़ को देख रही है। वह इस दुनियाँ को किसी और रंग में देख रहे हैं। और जिनकी अभी वह आँख नहीं खुली वह सबके सब इस दुनिया को किसी और रंग में देख रहे हैं। तो कबीर साहब फर्मा रहे हैं कि जिस तरफ़ भी नज़र मार के देखो, सारा जहान ही अन्धा है। वह लोग जिन के चेहरे पर आँखें हैं, वह भी अन्धे हैं, जिनके चेहरे पर आँखें नहीं हैं, वह भी अन्धे हैं। क्योंकि उनकी अन्तर की सूक्षम आँख नहीं खुली। जैसे बाहर हवा है, हवा में हमें कुछ नहीं नजर आ रहा। क्या हवा में कुछ नहीं है ? है तो सही मगर वह सूक्षम है। हमारी आँख अभी स्थूल है। या तो हमारी आँख इतनी सूक्षम हो, जितनी की यह हवा सूक्षम है, तब उस में कुछ दीखेगा। या सूक्षम हवा इतनी स्थूल बन जाय कि हमारी आँख की Range (पकड़) के मुताबिक हो जाये। फिर हम देख सकेंगे। गुरु नानक साहब ने अन्धे की तारीफ की है। फर्माते हैं -

अन्धे से न आखियन जिन मुख लोइण नांहि ।
अन्धे से ही नानका जे खसमों कुत्थे जाँहि ।

अन्धा उनको नहीं कहा जाता है कि जिनके चेहरे पर आँखे नहीं हैं, बल्कि अन्धे वह लोग हैं जिनकी अन्तर की आँख नहीं खुली और उस मालिक को नहीं देख रहे हैं। सब वेद-शास्त्र ग्रन्थ-पोथियाँ यह कह रही हैं, कि परमात्मा परिपूर्ण है, घट-घट वासी है। ज़र्रे ज़र्रे में समा रहा है। मगर वह अति सूक्षम और अगम है। हमारी आँख स्थूल होने के सबब से उसे नहीं देख रही है। गुरु नानक साहब ने कहा, उसको कौन देख सकता है ?

एवड ऊंचा होवे को, तिस ऊंचे को जाने सो।

जितना वह मालिक अति सूक्षम और अगम है, अगर हम भी उतने ही सूक्ष्म और अगम हो जायें तो फिर हम उस को देख सकेंगे। उस से पहिले नहीं। तो सारी दुनियां की तरफ नजर मार कर कबीर साहब यह फर्मा रहे हैं कि सारा जहान ही अन्धा हो रहा है। एक दो हों तब तो उन्हें कोई समझायें, सबकी हालत यही बनी पड़ी है। आलिमों (विद्वानों) की भी अन्तर की आँखें बन्द हैं। उनकी अन्तर की आँख नहीं खुली, बेइल्मों की भी वही कैफियत

है। अमीर गरीब, हाकिम और मैहकूम, एक ही हालत में जा रहे हैं। अब अन्धा अन्धे को कैसे चलाये ? Blind leads the blind both fall into the ditch. अन्धा अन्धे को चलायेगा दोनों ही खन्दक में गिरेंगे ।

एक फकीर थे। वह किसी गांव में गये। वहाँ उन लोगों पर उन को रहम आ गया और उनको कहा कि कल इतने बजे एक हवा चलेगी, जिस जिसको वह हवा लग जायेगी वह सब पागल हो जायेंगे। उन में से कुछ आदमियों को उस फकीर पर भरोसा था। उन्होंने उस की बात मान कर दूसरे दिन जो वक्त बताया गया था उस वक्त अन्तर में छिप कर बैठ गये। हवा चली। जितने बाहर लोग थे सबको लग गई और वह सब के सब पागल हो गये। जो अन्दर छिपे थे उनको हवा नहीं लगी। जब वह बाहर निकले तो देखा कि सबको हवा लग गई और सबके सब पागल हो चुके हैं। उन पागलों ने यह देखा कि यह जो दो -चार -पाँच आदमी नई किस्म के आ रहे हैं, यही पागल हैं। कहने लगे कि यही पागल हैं। तो यही हालत दुनिया की बनी पड़ी है। कहीं कहीं अनुभवी पुरुष, जिसकी आत्मा मन-इन्द्रियों से आजाद हो कर ऊपर आई है, अन्तर सूक्षम आंख, नज़र, खुली है, जिससे कि वह परमात्मा को जर्रे-जर्रे (कण-कण) में देख रहे हैं। उनकी तो आँखें खुली हैं, बाकी सबके सब मन-इन्द्रियों के घाट पर बाहरी इन्द्रियों का रूप बने बैठे हैं। तो फ़र्मा रहे हैं, किस को, और कैसे कोई समझाये? एक दो हो तो कोई समझा दे, जब सब तरफ यही हाल हो तो फिर इनका क्या किया जाये? आगे फरमाते हैं -

इकदो होए उन्हें समझाऊं,
सभी भुलानो पेट के धन्धा ।

फर्माते है, एक दो हों तो उनको कोई समझाये भी। जिस तरफ देखो सब तरफ, हर कोई पेट के धन्धे ही में फंसा पड़ा है, जिसम-जिस्मानियत की जिन्दगी को ही सब कुछ समझ रहा है। नौकरी पेशा, मजदूर, व्यापार करने वाले लोग इनका तो खैर Aim (ध्येय) ही Money-making (रुपया कमाना) है, मगर वह लोग भी, जो कहते हैं कि हमारा ध्येय परमार्थ है, लोगों को पूर्ण रूप में इन्सान बनाना है, लोगों की अन्तर की आँख खोलकर प्रभु से मिलाने का काम जिन्होंने अपने जिम्मे ले रखा हैं, वह भी दरपर्दा (छिपकर) यही कुछ कर रहे हैं। Man-making का सवाल था, Money-making में लग रहे हैं । Word (शब्द) की तालीम देनी थी, World (दुनिया) में लगे पड़े हैं। अन्त समय आता है तो होश आती है ।

कहें कबीर तेही नर जागे,
जब जम का डंड मून्ड में लागे ।

उस वक्त आँख खुली तो क्या खुली ।
अब पछताये होत क्या चिड़ियां चुग गई खेत

यही कारण है कि जब कभी भी अनुभवी पुरुष दुनियां में आए, बड़े-बड़े आलिम फाजिल लोगों ने उनको कुराहिया (पथभ्रष्ट) कहा है, उन को गुमराह कहा है। उनको यही कहा कि यह लोगों की अकलें बिगाड़ता है। गुरु नानक साहब जैसी हस्ती को लोगों ने कुराहिया कहा, कसूर शहर में जा रहे थे, लोगों ने शहर में दाखिल होने नहीं दिया, कि यह लोगों की अकल बिगाड़ता है। बड़े बड़े मठों के अन्दर देखने से अफसोस से कहना पड़ता है, वहाँ भी यही कैफियत हो रही है। दुनियां में तो खैर चार सौ बीस चलती है, मगर परमार्थ में यह देखा जा रहा हैं, कि वह भी दरपर्दा, दुनियां के पुजारी हो रहे हैं। तो कबीर साहब कहते हैं, जिस तरफ भी नजर मार कर देखो, सारा जहान ही अन्धा है। लोग अन्धाधुन्ध लगे पड़े हैं। खाओ-पियो और मौज उड़ाओ। इस जिस्म-जिस्मानियत से परे उनको कोई जिन्दगी नजर नहीं आ रही है। यही उनका दीन और यही उनका ईमान बनी पड़ी है। अब कोई उनको समझाये तो कैसे समझाये ? एक दो हों तो उनको समझाये भी, यहाँ तो जिस तरफ नजर मारो यही हाल हो रहा है।

पानी के घोड़ा पवन अस्वरवा,
डुरक परे जस ओस के बरूआ ।

फर्माते हैं, इन्सान की जिन्दगी की हैसियत क्या है ? पवन का घोड़ा है और रूह रूपी सवार है। जैसे ओस का कतरा होता है, अन्तर में हवा है, बाहर पानी का पर्दा हैं, ओस की जिन्दगी कब तक है ? थोड़ी सी हवा चली, थोड़ी सी गर्मी आई, उसका नाम-निशान नहीं मिलता है। यही हालत इन्सान की हैं। जिसम में जब तक प्राण चल रहे हैं, और आत्मा इसके साथ है, तब तक इस जिसम की जिन्दगी है। जब इस जिस्म का साथी इससे जुदा हो जाता है तो चारों शाने चित्त। चार भाई उठा कर इसको श्मशान भूमि में पहुंचा देते हैं। अब हम अपनी आंखों से देख रहे हैं, ऐसे ही कई जिस्म, जो अब हम लिये फिर रहे हैं, हमने अपने कन्धों पर उठाकर श्मशान भूमि में पहुँचाये हैं। और कई एक को अपने हाथों से दाग

भी दिया, मगर दुनियाँ की सत्यता का ख्याल, इतना प्रबल हो रहा है कि हमको देखते हुये भी यकीन नहीं आ रहा है कि हमने भी एक दिन यह जिसम छोड़ना है। तो फर्मा रहे हैं कि जैसे ओस की बूंद की जिन्दगी क्षण भिंगुर है, थोड़ी देर के लिये है, आखिर यह फना हो जाने वाली है, ऐसे ही मनुष्य जीवन में भी एक समय आता है जब जिसम से इसका मकीन (निवासी) जुदा होता है तो यह सारा सिलसिला बना-बनाया खत्म हो जाता है। आखरी तबदीली जिसका नाम मौत है वह सब पर आनी है ।

राना राव न को रहे रंक न तंग फकीर ।
वारी आपो आपणी कोई न बान्धे धीर ।

न बादशाह रहे, न रय्यत रही, न दुनियांदार रहे, न वली-औतार रहे। बड़ी-बड़ी हस्तियां दुनियाँ में आई, और आखिर जिस्म छोड़ गई। तारीख (इतिहास) इस बात की गवाह है। हमारी आँखें इस बात की शहादत देती हैं। और हमने भी तो आखिर एक दिन जिस्म छोड़ कर जाना है। तो इससे पहले कि हम इस जिसम को छोड़े, अगर हमारी अन्तर की आँख खुल जाये, हम अपनी मर्जी से जब चाहें इससे (स्थूल शरीर से) ऊपर सफर कर सकें, इसमें दो फायदे हो जायेंगे। एक तो पिण्ड को छोड़ना जिन्दगी में आ जाये, तो मौत के समय पिण्ड को छोड़ते हुए कोई तकलीफ नहीं होगी। दूसरे, जब यह चाहे आसमानों पर सफर करे, जब चाहे यहाँ सफर करे। तो जो हमेशा जिन्दगी है उसका इसको पूरे तौर से यकीन हो जायेगा। जो इसलिये पड़े हैं, इसी को सब कुछ समझ रहे हैं, आखिर एक दिन जिस्म के अन्त होने पर आँख खुलेगी तो पछताना होगा । तो इसलिये सब महात्माओं ने इस बात पर जोर दिया है कि जब तक तुम इस जिन्दगी को सम्भाल कर बसर कर रहे हो, तब तक तुम्हारी जो दूसरी जिन्दगी है, उससे तुम महरूम (वंचित) रह जाओगे। बाईबल में कहा हैं, Whosoever shall lose this life shall save it कि जो अपनी जिसम-जिस्मानियत की जिन्दगी को छोड़ना सीख जाता है, वह हमेशा की जिन्दगी को पा जाता है और Whosoever shall save this life shall lose it. कि जो इस जिसम-जिसमानियत की जिंदगी को हर वक्त सामने रखता हुआ इसी को सम्भालने की कोशिश कर रहा है, वह हमेशा की जिन्दगी को Lose (नष्ट) करता जा रहा है। सब महात्माओं का यही उपदेश रहा है। क्राईस्ट ने फिर एक जगह कहा है कि Except you be reborn you cannot see the kingdom of God.

जब तक अर्थात् जिसम-जिस्मानियत से ऊपर आकर एक नई दुनियाँ में तुम जन्म नहीं लेते तुम खुदा की बादशाहत को नहीं देख सकते। इस जिस्म की कीमत क्या है? तो क्राईस्ट ने कहा, Is not body more than the raiment and life more than the meat ? हमारे इस जिस्म और जिसमानी ताल्लुकात से हमारी आत्मा की कीमत ज्यादा है। सो फर्मा रहे हैं कि बाहर की, जिसम जिस्मानियत की जिन्दगी एक ओस के कतरे की तरह है। उसकी जिंदगी कब तक है ? किसी भी वक्त छूट सकती है। ऐसे ही इन्सान के जिसम का भी अन्त किसी वक्त भी हो जाता है। जब भी इसके स्वांसों की पूंजी खत्म होती है इसको जाना पड़ता है। वह वक्त कब आ जाए कोई टाईम (समय) मुकर्रर नहीं। तो हमें क्या करना चाहिए ? हमें जल्दी से जल्दी इस तजुरबे को पा लेना चाहिये कि हम पिण्ड से कैसे ऊपर आ सकते हैं, ताकि मौत का खौफ़ न रहे।

गहरी नदिया अगम बहे धरुवा,
खेवन हारा पड़ेगा फंदा ।

कहते हैं, संसार सागर एक बड़ी गहरी नदिया बह रही है, और उस पर हमारी जीवन रूपी नैया Adrift हो रही है (बह रही है)। कहीं न कहीं भंवर पड़ रहे हैं, कहीं न कहीं इस ने फंस जाना है, और यह डूब जायेगी। यह संसार सागर की कौन सी गहरी नदी है जो बह रही है ?

मन समुद्र लख न पड़े उठें लहर अपार ।

मन रूपी समुन्दर में अपार लहरें उठ रही हैं, कभी काम की, कभी क्रोध की, कभी लोभ, कभी मोह, कभी अहंकार। इन लहरों में हरेक इंसान झकोले खा रहा है। कहीं न कहीं भंवर में फंस कर यह डूब जाता है, गिर जाता है।

दिल दरिया समरथ बिना कौन लंघावे पार ।

कोई समरथ पुरुष मिले, जिसने इस मन को अबूर (पार) किया है, इन लहरों से अपने आप को बचाया है, उसकी सोहबत में यह भी इसकी अथाह लहरों से निकल सकता है।

घर की वस्तु निकट नहीं आवत,
दियना बारि के ढूंढत अन्धा ।

फर्माते हैं कि वह चीज जिसकी हमको तलाश है, वह हमारे अन्तर में है, नजदीक से भी नजदीक है, मगर यह दीवा जलाकर बाहरमुखी तलाश कर रहा है। कहीं ग्रन्थों-पोथियों में, कहीं दरियाओं के तटों पर, कहीं पहाड़ों की चोटियों पर, और कहीं बाहरमुखी इन्द्रियों के साधनों में तलाश कर रहा है। वह कैसे मिल सकता है ? मन को इन्द्रियां रूपी घोड़े भोगों रूपी खेतों में खैंचे लिये फ़िरते है। इसको अन्तर्मुख होने का कोई समय नहीं मिला, वह चीज कि जो इसके घट-घट में है, जो इसकी अपनी आत्मा की आत्मा है, यह उससे महरूम (वंचित) रह जाता है। मुझे कानपुर में एक साहिब ऐसे मिले जिसने कहा कि मैंने गंगोत्री से जल लेकर कन्याकुमारी तक पैदल चल कर वहां का पानी वहां पहुंचाया है, और कन्याकुमारी से पानी लेकर गंगोत्री में चढ़ाया है, मगर वह चीज नहीं मिली जिसकी मुझे तलाश थी। वह मिल भी कैसे सकती है ?

वस्तु कभी ढूंढे कहीं केहि विधि आवे हाथ ।
कहें कबीर तब पाईये जो भेदी लीजे साथ ।

चीज तो कहीं और हो, मगर यह तलाश कहीं और कर रहा हो, तो फिर वह कैसे उसको पा सकता है ?

भेदी लीना साथ कर दीनी वस्तु लखाय ।
कोटि जन्म का पन्थ था पल में पहुँचा जाए ।

अगर भेदी को साथ लेंगे तो करोड़ों जन्म का जो रास्ता है, पल में वहां पहुँच जायेगा। हम अब जो कुछ भी तलाश कर रहे हैं, बाहर जिस्म-जिसमानियत के घाट पर कर रहे हैं। वह चीज अन्तर में है ।

है घट में सूझत नहीं लानत ऐसी जिन्द ।

कि वह जिसकी हमको तलाश है, वह हमारे घट में बस रहा है। लानत है ऐसी जिन्दगी को, मनुष्य जीवन पाया भी मगर उसको नहीं पाया ।

तुलसी या संसार को भया मोतियाबिन्द ।

ऐ तुलसी ! सारी दुनियाँ को ही मोतियाबिन्द हुआ पड़ा है। मोतियाबिन्द एक किसम की बीमारी है, जिससे पानी का पर्दा आँखों की झिल्ली के सामने आ जाता है, उससे देखने की

जो शक्ति है, वह बन्द हो जाती है। कोई लायक डॉक्टर उसका अप्रेशन कर दे, पानी के पर्दे को सफाई के साथ उतार दे, तो उसकी नज़र ठीक हो जाती है। नजर आगे ही मौजूद है सिर्फ पर्दा आ जाने से बन्द हो गई है। ऐसे ही, वह परमात्मा हमारे घट-घट में है ।

घट- घट में हरि जू बसें सन्तन कहयो पुकार ।

वह परमात्मा घट-घट में बस रहा है, सारे महापुरुष यही पुकार-पुकार कर चले गये। जो घट में है, वह बाहर कैसे मिलेगा ? स्वामी रामतीर्थजी के मुतल्लिक जिकर आता है कि एक बार जब वह लाहौर हर चन्द की पौड़ियों में रहा करते थे तो बाहर गली में गये। एक बुढ़िया थी, दीवा लेकर कुछ तलाश कर रही थी। उससे पूछा, माता क्या तलाश कर रही हो ? उसने कहा, ''बच्चा यहां सूई गुम गई है, उसको ढूंढ रही हूं।'' यह भी साथ ही ढूंढते लग गये। फिर जब न मिली तो कहने लगे, माता सूई गिरी कहां थी ? तो वह कहने लगी, सूई तो अन्दर घर में गिरी थी। कहने लगे, माता जो घर में गिरी है, वह बाहर कैसे मिलेगी? यह बात हंसने की है, मगर सचमुच हम कर यही रहे हैं । आत्मा उस मालिक के आधार पर कहो, जिस्म के साथ कायम है। उसका Divine link (दिव्य सूत्र) घट-घट में मौजूद है और हमारी आत्मा का आधार है। उसको हम बाहर इन्द्रियों के फैलाव में ढूंढना चाहते हैं। बताओ कैसे पायें ? तो कबीर साहब फर्मा रहे हैं कि दुनिया अन्धी नहीं है तो और क्या है ? चीज तो घर में है, और यह दीवा जलाकर बाहर तलाश कर रहा है ।

लागी आग सकल बन जरेगा,
बिन गुरु ज्ञान भटकेगा बन्दा ।

कहते हैं, सारी दुनियां को तृष्णा की आग लग रही है। घर-घर इसी आग की नजर हो रहे हैं। समाजों की समाजें, शहरों के शहर, मुल्कों के मुल्क इसी अग्नि में जल रहे हैं। अरे भाई तुम भी इसी में जल रहे हो। Infection होती है, जैसे आदमी की सोहबत वैसा रंग। एक ऐसा पुरुष जो दुनियां में रंगा पड़ा है, अगर उसकी सोहबत-संगत आपको मिल जाये, तो उसके लफ़ज उसी दुनियां के रंग से Charge हो कर आते हैं, वही असर आपको भी दे जाते हैं। और आप भी अन्धाधुन्ध उधर ही लग जाते हैं। तो फर्मा रहे हैं, सारी दुनियां में आग लग रही है। यह आग किन को नजर आती है ? उन लोगों को जिनकी अन्तर की आँख खुली है। जो सूक्षम नजर से दुनियां को देखते हैं। दूसरों को नहीं। मगर जल सब ही रहे हैं। हर एक इन्सान अगर बैठ कर देखे तो अन्तर में कुछ जलन, धुखन जैसी महसूस होती है।

यह गुप्त आग है। ''गुझी भा जले संसार।'' यह सारा संसार उस गुप्त आग में जल रहा है। फिर इसका कोई बचने का उपाय ? हां हो सकता है। कहते हैं, वह सत्गुरु का ज्ञान है, जिसको वह मिले वह इस अग्नि से बच सकता है, बाकी सबके सब जल रहे हैं। यह गुरु बाणी में कहा है -

बड़बा अगन सकल तृण जाले,
कोई विरला बूटा हरयो री ।

बड़ुवा अग्नि ने सारे पौधों और पेड़ों को जला दिया है। कहीं कोई पेड़ बाकी रहता हैं। और वह पेड़ कौन सा है ? वह किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत संगत, उसकी नजदीकी है। यही मौलाना रूम साहब ने कहा है -

दिला नज्दे कसे बिनशीं,
के ऊ अज दिल खबर दारद।

ऐ दिल तू, किसी ऐसे की नजदीकी अखत्यार कर जिसको हमारे दिल की कैफियत (अवस्था) का पता हो, इन मन रूपी थपेड़ों से गुजरा हो, इसको काबू किया हो। आगे कहते हैं -

बजेरे आं दरख्ते रौ बरो गुलहाय तर दारद।

किसी ऐसे दरख्त के नीचे बैठो, जिसके ऊपर तरो-ताजा फूल हों, महकदार, ठंडक देने वाला हो। कहते हैं, वह कौन है ? किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत, जिसकी अन्तर की आँख खुली है। उसकी सोहबत में बैठने से बाहर दुनियां की जो जलन है, जिसमें दुनियां सब जल रही है, उससे बच जाता है। ठंडक आ जाती है। जैसे एक धूप में तपा हुआ पुरुष किसी छायादार दरख्त के नीचे आ बैठे तो उसको वहां ठंडक मिलने से होश आ जाती है। ऐसे ही दुनियां में जो लोग किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में आते हैं, वहाँ जाकर थोड़ी देर के लिए उस मण्डल में बैठने से यकसूई (एकाग्रता) के साथ थोड़ी राहत महसूस होती है। कहते हैं कि इसके बचने का एक ही तरीका है, कि किसी सतगुरु की सोहबत में जाये। सत्गुरु किस को कहते हैं ? जो सत का स्वरूप हो चुका है । ''सतगुरु सत स्वरूप है'' जिसकी आत्मा मन-इन्द्रियों से आजाद हो कर अपने आपको जान चुकी है, और सत के साथ लगकर सत का स्वरूप हो चुकी है, ऐसी हस्ती का नाम सतगुरु है। कहते हैं, सतगुरु की एक

तो सोहबत ठंडक देने वाली है, और दूसरे वह ज्ञान जो उससे हासिल होता है। ज्ञान आम दुनिया पढ़ने-लिखने बिचारने को कहती है। मगर इसका नाम सन्तों ने ज्ञान नहीं बतलाया, उन्होंने तारीफ की है-

ज्ञान ध्यान धुन जानिये अकथ कहात्रे सो।

ज्ञान और ध्यान वह ध्वनि है, वह श्रुति है, उदगीत है, जो ज़र्रे-ज़र्रे में समा रहा है और सब दुनिया का आधार बन रहा है। उसके साथ लगने का, उसके अनुभव का नाम ज्ञान है। वह सतगुरु द्वारा मिलता है। है अब भी, मगर हम उसके Conscious नहीं हैं, हमारी आत्मा मन के अधीन होकर इन्द्रियों के घाट पर बाहरमुखी फैल रही है।

नौ घर देख जो कामण भूली वस्तु अनूप न पाई ।

नौ घर को देखकर जो रूह रूपी स्त्री भूल रही है, इसके अन्तर एक अनूप वस्तु बस रही है, उससे यह बेखबर रहती है। वह नौ घर कौन से हैं ? दो आँख के, दो कान, दो नासिका, मुंह, गुदा और इन्द्री। जिसकी सुरति इन घाटों के बाहर फैल रही है, इसके अन्तर में अनूप वस्तु है, वह दिव्य सूत्र, वह ज्ञान, वह उदगीत, घट-घट में हो रहा है, यह उसको अनुभव नहीं कर सकती। तो कहते हैं, जिसको इन्द्रियों के घाट से उलट कर अन्तरमुख उस गुरु के ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई, वह सब के सब ही जल जायेंगे। इससे बचने का केवल एक ही उपाय है। और वह यही है जो बयान किया गया है। बाहरी पढ़ना-लिखना, विचारना, ग्रन्थ-पोथियों का स्वाध्याय और और जितने साधन हैं, इनसे इस आग से बचना नहीं होगा। थोड़ी देर के लिए अगर बिचार से आप बच भी गये तो फिर उसी में गिर जाओगे। यह माया अग्नि कहां से हम पर असर करती है ? इन्द्रियों के घाट से। जब आपने इन्द्रियों का घाट छोड़ना शुरू कर दिया, अन्तर की ठंडक और उस रस को पा गये, तो बाहर की तपिश फिर आप को तकलीफ नहीं देती। जैसे Air-conditioned कमरे बने हों, कितनी भी गर्मी बाहर हो, उन कमरों के अन्दर कोई गर्मी नहीं। ऐसी ही हालत उस इन्सान की हो जाती है। कितनी भी गर्मी में आप चले जाओ, अगर आपकी तवज्जो दो भ्रु-मध्य पीछे टिकी रहे तो आपको गर्मी का एहसास नहीं होगा। यह कभी करके देखिये। हम इस Natural science (कुदरती विद्या) से नावाकिफ़ होने के सबब से दुनियां में दुख उठा रहे हैं। कहते हैं, यह गुरु का ज्ञान मिलता कब है ? जब कोई सत्गुरु मिल जाये। इस आग को कौन देखता है ? कोई

अनुभवी पुरुष। गुरु नानक साहब घर से निकले तो घरवालों ने उनके दो लड़के सामने लाकर खड़े कर दिये । और उनकी सास थी, मूलोजी उसका नाम था, वह कहने लगी, देख नानक! अगर तूने यहीं कुछ करना था तो यह बच्चें क्यों पैदा किये ? दुनिया की जबान बड़ी सख्त होती है। तो कहने लगे, माता, जिन बन्धनों में तू मुझे बांधना चाहती है, मैं दुनिया को इन बन्धनों से आजाद करने आया हूँ । जगत् में आग लग रही है। मैं इस आग को बुझाने के लिए आया हूँ। और प्रार्थना की -

जगत जलन्दा रखले प्रभु आपन कृपा धार ।

हे प्रभु, हे परमात्मा, जगत जल रहा है, इसको आप ही बचा लीजिये। कहते हैं कैसे ?

जित द्वारे उभरे तित ही लियो ही उभार ।

जैसे तैसे भी हो सकता है, आप दया करके इनको जलती आग से निकाल लो। सो जागते पुरष के कलामों से यह बड़ा साफ मालूम होता है कि इन्द्रियों के घाट का जो जीवन, जिस्म और जिस्मानियत से ताल्लुक रखता है, यह दुख का कारण है।

देह धर सुखिया कोई न देखा,
जो देखा सो दुखिया हो।

जब इन्द्रियों के घाट से, स्थूल से, ऊपर आओगे तो इससे बेहतर जिन्दगी मिलेगी, जब सूक्ष्म जिंदगी से ऊपर आओगे, कारण में, उससे बेहतर और सुखदाई जिंदगी है, मगर तीनों जिन्दगियों मे, स्थूल, सूक्ष्म और कारण में, दुख है। जब तक तुम तीनों को Transcend (पार) न करो, तुम सुखी नहीं हो सकते पूरे तौर से। तो कबीर साहब फर्मा रहे हैं कि गुप्त आग में सारा जहान जल रहा है । अगर कोई बचने की सूरत है तो वह सिर्फ सतगुरु की सोहबत और संगत है, और उससे जो ज्ञान की प्राप्ति होती है, उसकी कमाई का करना है, अगर तुम करोगे तो तुम्हारी अन्तर की आँख भी खुल जायेगी और इस गुप्त आग में भी जलना बच जाओगे। तो फर्मा रहे हैं कि सारा जहान ही अन्धा है। महापुरुष हर तरह का कष्ट उठाकर भी जीवों को चिताते हैं। वह पापों से घृणा जरूर करते हैं, मगर पापियों से वह दिलो प्यार करते हैं। वह कहते हैं, पापी हो या पुण्यवान, हर एक इन्सान के लिए उम्मीद है कि वह बेहतर हो सकता है। कौन लोग ? जो उनके हुक्म की बजावरी करते हैं। हमारा काम सिर्फ प्यार भरी Devotion (भक्ति) है। बाकी सब काम उनका है। जो प्यार नहीं कर सकता है

वह परमात्मा को भी नहीं जान सकता, क्योंकि परमात्मा प्रेम है। हमारी आत्मा भी प्रेम है।अगर यह, इसके बाहर के गिलाफों को हटा दिया जाय तो इसके अन्तर वह दबा हुआ प्रेम जो है, जाग उठेगा, और उसको फिर Higher self परमात्मा या परमात्मा का जो पोल है (प्रभु में अभेद महात्मा) उसके साथ प्यार करने से यह परमात्मा के जानने के काबिल हो जायेगा ।

कहें कबीर सुनो भई साधो,
एक दिन जाई लंगोटी झाड़ बन्दा ।

कबीर साहब आखिर में फर्माते हैं कि ऐ भाई, इस बात को अच्छी तरह से जान लो, कि एक दिन तुम लंगोटी झाड़कर चल पड़ोगे। लंगोटी झाड़ने का भी सवाल कहां आता है ? जिसम जो साथ आता है वह भी साथ नहीं जाता। सबने छोड़ा, हमने भी छोड़ना है। No exception to the rule. अब अगर हम इस बात को मान लें तो हमारी सारी जिन्दगी का नजरिया जो है, Angle of vision (दृष्टिकोण) वह भी बदल जाता है।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे,
एहला जन्म गंवाया ।

एक बार मनुष्य जीवन की पौड़ी हाथ से निकल गई तो यह मनुष्य जीवन जो अब इस वक्त हमको मिला है, यह तो चला गया, हाथों से निकल गया, फिर जब दुबारा इन्सान को मनुष्य जीवन मिलेगा तब यह काम, आत्मा को मन इन्द्रियों से आजाद करना, अपने आपको जानने, प्रभु को पहिचानने का काम, कर सकेगा। अगर यह जीते जी इसने यह काम नहीं किया, यह दुनिया में जिसम की लज्जतों ही में फंसा रहा, तो नतीजा क्या होगा ? जहां आसा तहां बासा। बार-बार आना-जाना पड़ेगा। तो सारे महात्मा यही कहते हैं कि भई इस बात को पक्की तरह से जान लो कि तुमने एक दिन जाना है। जाना कोई हव्वा नहीं, मगर हमको अकलमन्दी से काम लेना चाहिये जिससे जाते वक्त और बाद की जिन्दगी में भी हमको सहूलियत हो जाये ।

एक राजा का जिकर आता है। एक मुल्क था ऐसा जिसमें पांच साल के लिये एक राजा चुना जाता था, और उसको हर एक तरह के पूरे अखत्यारात थे। पांच साल के बाद उस राजा को सब आदमी, साथ ही एक जंगल था जिसमें शेर, वघियाड़, सांप बगैरा थे, वहां छोड़ आया करते थे। जब राजा तख्त पर बैठता तो बड़ी खुशी होती थी। मगर जब उसका

तख्त छोड़ने का दिन आता था तो वह रोता था। कई राजा आये और चले गये। सबकी यही हालत रही। एक राजा आया, उसने सोचा भई मैंने पांच साल के बाद किधर जाना है ? अकलमन्द आदमी था। सोचा पांच साल का राज तो ठीक, पांच साल के बाद क्या हशर होगा ? उसने क्या किया, खुफिया (गुप्त रीति से) तौर पर आदमी भेज दिये जंगल में। जंगल को कटवा दिया, साफ़ सुथरा बना दिया, उसी में बाग-बगीचे लगवा दिये, महल बनवा दिये, हर तरह के ऐश और आराम के सामान जुटा दिये, चार-पांच साल में काफी इन्सान काम कर सकता है। अब उसका समय पूरा हुआ तो जाने की बारी आई। उसको कहा भई अब आपका वक्त खत्म हो गया है, चलिये राजा कहने लगा, हाँ चलिये। बड़ा खुश था, हँसता था। कहने लगे, महाराज यह बात क्या है ? आगे जितने भी राजा यहां आये, वह सब जाती बार तो रोते ही चले जाते थे। आप बड़े खुश हो। कहने लगा जहाँ मैंने जाकर रहना है, उसके लिये मैंने अभी से वह जगह सम्भाल ली है। तो इसलिए मुझे वहाँ जाने में खौफ नहीं है मुझे वहां ज्यादा राहत होगी। यहां तो कई किसम की जुम्मेदारी मेरे सिर पर थी। वहां कोई जिम्मेदारी नहीं रहेगी ।

मनुष्य जीवन का जो समय हरेक इंसान को मिलता है, यह Golden opportunity (सुनेहरी मौका) है। बड़े भागों से यह जीवन मिला है। इससे फायदा उठाना चाहिये। आखर यह जिस्म एक दिन नहीं रहेगा। मौत कोई हव्वा नहीं, आखर सबने जाना है। और हमने भी जाना है। कौन रहा, कौन रह सकता है। अगर इस जिस्म से Beyond (परे की जिन्दगी) जिसको हम कहते हैं, Life after death, पिण्ड को छोड़कर कहां जाना है, जिन्दगी ही में हम हल कर लें, हमारी वह आँख खुल जाये जिससे Beyond की जिन्दगी का तजरूबा हम देखने लग जायें आँखों से, और पिण्ड छोड़कर आखर अन्त समय आएगा, मौत के वक्त जब जिसम छोड़ना पड़ता है। अगर जीते जी इस पिण्ड से ऊपर आना सीख जायें तो मौत का खौफ़ कहाँ रह जायेगा ? जहां जाना है जिसको Everlasting (अमर) जिन्दगी करके बयान किया है, Kingdom of God करके बयान किया है, ''बेगमपुरा उस शहर का नाओं।'' एक ऐसा शहर जहाँ सुख ही सुख और शान्ति ही शान्ति है, उसका अगर हमें इसी जिन्दगी में तजरूबा होने लग जाये तो फिर मौत का क्या खौफ़ रह जायेगा?

मरने ते सब जग डरे जीविया लोड़े कोय ।

मरने से, जिस तरफ़ भी देखो, सारा जहान भयभीत रहा है, हाय मौत, हाय मौत आ गई !

गुर परसादी जीवत मरे तां हुकमे बूझे कोय ।

अगर कोई अनुभवी पुरुष मिल जाये, उसकी कृपा से यह जीते जी मरना सीख जाये, तो यह Conscious cowoker of the divine plan बन जाएगा, वह ये देखेगा कि प्रभु कर रहा है, मैं नहीं, वह उसके हुक्म के बूझने वाला हो जाएगा । सन्त क्या कहते हैं ?

नानक जीवन्देयां मरे तां सदजीवन हो ।

जीते-जी पिण्ड को छोड़ना सीख जाए तो हमेशा की जिन्दगी को पा जाएगा। स्वामीजी महाराज इसीलिये कहते हैं -

यह तो समय मिला अति सुन्दर ।

यह सुनहरी मौका तुम्हें मिला है मनुष्य जीवन का। इसमें ही हमने यह काम करना है। हमारा यहाँ काम सिर्फ खाना-पीना और जिस्म और जिस्मानियत के ताल्लुकात को ही बनाना नहीं है बल्कि इसके अलावा कुछ और भी है, जिसकी तरफ से हम बिलकुल बेपरवाह हो रहे हैं। एक कबूतर हो, वह बिल्ली को देख कर आँख मीच ले तो इसका मतलब यह नहीं कि बिल्ली नहीं है। पता उसी वक्त लगेगा जब वह बिल्ली की झपट में आयेगा। आखर एक दिन मौत ने तो आना है। जिस्म को छोड़ना है। सबको एक दिन यहां से जाना है। उसके लिये जो अभी से तैयारी का करना है वह क्या है ? किसी ऐसे पुरुष की सोहबत में बैठना जिसने इस गुत्थी को हल किया है Mystery of life को, जिन्दगी की गुत्थी को। उसका हल करना क्या है ? यह जानना कि हम कौन हैं ? हम यह जिस्म नहीं, हम इस जिस्म के चलाने वाले हैं। वह जो चलाने वाली इसमें शक्ति है, वह हम है। जीते जी अगर हम उसको इस जिस्म से ऊपर लाना सीख जायें तब हम उसको जानेंगे,हमारी देखने वाली नजर बदल जाएगी। अब हम जिस्म के Level से जगत को देख रहे हैं। यह जगत बदल रहा है, यह जिस्म भी बदल रहा है-दोनों एक ही रफ़तार से बदल रहे हैं। हिसाबदानों ने यहाँ तक हिसाब लगाया है कि हमारी हड्डियों के जो ज़र्रे हैं, यह सात साल में बिलकुल Renew (नये) हो जाते हैं, जब दो चीजें एक ही रफ़तार से बदल रही हों जैसे दरिया में बेड़ी (नाव) जा रही हो, जो बेड़ी पर बैठे हैं आदमी और बेड़ी उस तरफ जा रही है जिस तरफ दरिया जा रहा है उनको पानी खड़ा मालूम होता है, क्योंकि एक ही रफ्तार से दोनों जा रहे हैं । अगर कोई आदमी बेड़ी से बाहर खड़ा हो जाये, वह क्या देखता है कि बेड़ी भी बह रही है, उसमें बैठे

लोग भी। और पानी भी बह रहा है। वह पुकारता है, अरे भाईयों तुम बह रहे हो। वह कहते हैं, महाराज हम तो ठीक-ठाक है। बड़ा भारी एक धोखा है जिसमें दुनिया जा रही है। तो पिण्ड से ऊपर आने से हमारी अन्तर की वह आँख खुलती है जिससे सही-नजरी बनती है। वह आत्मा के Level से देखते हैं, कि यह जिस्म भी बदल रहा है और जगत भी बदल रहा है। अब यही दुनिया - जिस्म और उसके ताल्लुकात -हमारा दीन-ईमान बनी पड़ी है। जब हमारी अन्तर की आँख खुलेगी तो हम आत्मा की नजर से देखेंगे, यह सारा सिलसिला ही किसी और रंग में हमें नजर आयेगा। तो हमने यह काम भी करना है। अगर हम जीते-जी Beyond का (मौत से परे जो अमर जीवन है उसका) तजरबा कर लें तो यहां दुनियां में जो ऊंच-नीच आते रहते हैं, उनकी चुभन Pinching effect, नहीं रहेगा। दूसरे मौत का भय नहीं रहेगा। अन्तर Higher contact महारस, मिलने से बाहर के रस फीके पड़ जायेंगे। हर चीज को हम सही-नजर से देखेंगे। जिस Phase of life (जीवन क्षेत्र) में हम काम करेंगे, बड़ी कामयाबी से हर काम कर सकेंगे, क्योंकि Attention (सुरति) अपने कन्ट्रोल में हो तो जहां चाहे Direct कर सकता है। सारे महात्मा कहते हैं कि अरे भाई तू इन्सान है, हैवान (पशु) नहीं।

बिनगर दर हैवाँ के सर सूए ज़मीं दारद ।

मौलाना रूम कहते हैं, हैवान (पशु) की तरफ मत देख, उसका सिर कुदरत ने जमीन की तरफ बनाया है। अगर वह सारी उमर खाने-पीने में ही लगा रहे तो कोई बड़ी बात नहीं। तो कहते हैं -

तो आखर आदम अस्त सर बबाला कुन ।

अरे भई तू आखिर इन्सान है, तेरा सिर प्रभु ने ऊंचा बनाया है, तू ऊपर की तरफ़ देख। तू अशरफ़ अलमखलूकात (सर्वश्रेष्ठ) है अपनी श्रेष्ठता को संभाल । तू नर - नारायणी देह (यह मानव शरीर) रखता है इस देह में रहते हुए उस नारायण को पा जाओ। अगर मनुष्य जीवन को पाकर यह काम कर लिया तो मनुष्य जीवन सफल हो गया। अगर सीप में पानी का कतरा मोती बन गया तो सीप आज टूटे तो क्या और कल टूटे तो क्या ? खतरा तब है अगर सीप में पानी का कतरा अभी मोती नहीं बना। मौत एक हव्वा है उसके लिये। वह मौत से डरते हैं। सारा जहान मौत से डरता है। मगर जिन्होंने इस राज (भेद) को हल किया है, वह मौत से नहीं डरते। कबीर साहब कहते हैं -

जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द ।

ऐ भाई जिस मरने से जगत डर रहा है जब मैं मौत का नाम सुनता हूं तो मुझे बड़ी खुशी होती है, आनन्द होता है। कहते हैं क्योंकि यह जिस्म का पर्दा हट जाये, हमेशा के लिए परमात्मा में मिल जाये। मौलाना रूम साहब के मुतल्लिक जिकर आता है कि वह सख्त बीमार हो गये। कई फकीर उनका हाल पूछने के लिये आये और दुआ (प्रार्थना) की, हे खुदा, इनको शफ़ा दो। आँख बन्द थी। खोली। कहने लगे, भाईयों यह शफ़ा तुमको मुबारक रहे। क्या तुम यह नहीं चाहते कि जिस्म मेरे और उस मालिक के दरम्यान एक पर्दा है, यह हमेशा के लिये खत्म हो जाये और मैं उस मालिक में हमेशा के लिये वासिल (लय) हो जाऊं। यह किन लोगों का बयान है ? जिनकी अन्तर की आँख खुल चुकी है और प्रभु की जिन्दगी ही में पा चुके हैं। वह (प्रभु) हमसे जुदा नहीं, हम उससे जुदा नहीं हैं। मगर इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैलाव की वजह से हम अपने आपको भूल गये। बाहर से हटने और अन्तरमुख होने की जरूरत है। Tapping inside जिसे इमरसन ने कहा है। यह इन्द्रियों को उलटने का मार्ग है। यह मतलब नहीं कि इन्द्रियों को कुचल डालो। ना भई। इनसे डबल काम लो, अन्तर भी बाहर भी।

अब हम बाहर देख रहे हैं। आँख बन्द करते हैं तो अन्तर नज़र बन्द है। तो अन्धे नहीं तो और क्या हैं ? बाहर के कान खुले हैं, सुन रहे हैं। अन्तर में वह सत बाणी हो रही है, उदगीत हो रहा है। उसको नहीं सुन रहें, बैहरे नहीं तो और क्या हैं ? अन्तर नाम का रस आ रहा है। यह बाहर रसों-कसों में लम्पट है। उस रस से महरूम (खाली) है। अरे भाई हमारी गति क्या हो रही है ? तो महात्मा यह कहते हैं कि तुम्हारे अन्तर ज्योंति है परमात्मा की, उसको देखो। मगर अब वह नजर नहीं आ रही है। बाहर राग-रंग, यह वह, कान सुनते हैं। अन्तर में उदगीत हो रहा है। आकाशबाणी, नाद, हो रहा है। उसको हम नहीं सुनते हैं। शम्स तबरेज साहब कहते हैं कि हमने हजारों मादरज़ाद (जन्मजात) अन्धों को आँखें बख्श दी हैं जिससे मालिक को वह हर जगह देख रहे हैं। कईयों को, अन्धों को नाम मिलता है, वह खुश होते हैं, कहते हैं, वाह वाह, अन्तर सूरज चढ़ा पड़ा है। जब अन्तर में नज़र आने लग गया बाहर की आँख हो या न हो। सिर्फ यह है कि इस साईन्स (विद्या) से हम नावाकिफ़ हैं। पुरातन से पुरातन और सनातन से सनातन यह विद्या है, मगर हम भूल गये। महात्मा हमेशा आते रहे, इस साईन्स को ताजा करते रहे। उनके जाने के बाद फिर हम भूल गये, फिर कोई

और महात्मा आया, उसको ताजा कर गया। तो दुनियां कभी महात्माओं से खाली नहीं रही। Demand and supply (मांग और पूर्ति) का नियम अटल है। भूखे के लिये रोटी है, प्यासे के लिये पानी है। Guru appears when the chela is ready. यह कबीर साहब का शब्द था जो आपके सामने रखा गया। अब उनका एक और शब्द सुनिये। गौर से समझने के काबिल है ।

खल्क सब रैन का सुपना
समझ मन कोई नहीं अपना ।

परमात्मा ने इन्सान बनाये हैं। इन्सान आत्मा देहधारी को कहते हैं। आत्मा की जात वही है जो परमात्मा की जात है। सब इन्सानों के अन्तर एक ही आत्मा है। और वह महाप्रभु परमात्मा की जात के समुन्दर का एक कतरा है। A drop of the ocean of life. हमारी आत्मा मन के अधीन होकर इन्द्रियों के घाट पर जिसम का रूप बनी बैठी है, इतना कि हम अपने आपको भूल चुके हैं। हमारा पिछला सारा जीवन, जो आज दिन तक गुजर चुका है, वह एक सुपने की तरह दिखाई देता है। जब अन्त समय आयेगा, रूह इस जिस्म से जुदा होगी, उस वक्त हमारी अन्तर की आँख खुलेगी, पिछला सारा जीवन ही एक ख्वाब की तरह मालूम होगा। ऐसी हालत में कबीर साहब फर्मा रहे हैं, कि यह सारा जगत ही, एक सुपने की तरह है। इसमें हम जो कुछ देख रहे हैं, हमें सत भास रहा है। कारण ? जब दो चीजें एक ही रफ़्तार से चल रही हों, जो आदमी उन पर सवार हैं, उनको ऐसा मालूम होता है कि दोनों चीजें ही खड़ी हैं। बेड़ी में जो सवार हैं उनको यही भासता है कि बेड़ी भी खड़ी है, दरिया भी। क्योंकि दोनों की रफ़तार एक है। उनमें से कोई निकल कर किनारे पर खड़ा हो जाए, वह देखता है पानी भी बह रहा है, बेड़ी भी। वह पुकारता है, अरे भाईयों ! तुम बह रहे हो। वह दोनों तरफ देखकर कहते हैं, हम तो खड़े हैं। कितना भारी एक धोखा है जिसमें सारी दुनियां जा रही है। यह एक Grand delusion (भारी धोखा) है। जिनकी आँख खुली है, क्या मतलब, जिनकी आत्मा पिण्ड से ऊपर आई है, वह यह देख रहे हैं कि हर एक चीज बदल रही है। Matter is changing. हमारे जिसम के जर्रें भी बदल रहे हैं, सारा बाहरी संसार भी बदल रहा है। तो कबीर साहब फर्मा रहे हैं कि यह सारा संसार ही एक सुपने की तरह जा रहा है। यद्यपि हमें सतभास हो रहा है, असल में यह सत नहीं है। देखने वाली बात है कि सुपने में जो कुछ इन्सान देखता है वह उस वक्त उसको सत मालूम होता है,मगर जब

आँख खुलती है तो कहता है,ओ हो! यह ख्वाब था। सो ऐसे ही अन्त समय जब आता है, उस वक्त इन्सान यह देखता है कि यह सारा जीवन ख्वाब की तरह गुजर गया है। उस वक्त होश आई तो क्या आई ?

अब पछताये होत क्या जो चिड़िया चुग गई खेत

तो फर्माते हैं इसमें देखने वाली बात यह है कि इसमें हमारा कोई भी अपना नहीं है। अपने से मुराद यहां जिस्म से नहीं हमारी आत्मा से है। उस Very self से है जो हम खुद हैं। उसके साथ कौन चीज जाने वाली है ? जिस्म, जो साथ आता है, वह भी साथ नहीं जाता, तो फिर आप यह देखें कि जो चीजें इस जिसम करके हमारे साथ लगी हैं वह हमारे साथ कैसे जा सकती हैं ? तो जागते पुरुष हमेशा ही हमें जाग्रति दिलाते हैं, Awaken करते हैं, कि अरे भाईयों, तुम एक बड़े धोखे में जा रहे हो। यह जगत असत है, बदल रहा है, एक रस रहने वाला नहीं है। अगर कोई चीज सत इसमें है तो आत्मा है या परमात्मा है।

साधो इह तन मिथ्या जानो,
या भीतर जो राम बसत है साचा ताहि पछानो।

तो कबीर साहब इसी बात की हिदायत दे रहे हैं, कि भाई यह जिसम भी बदल जाने वाला है। जगत के हालात बदल जाने वाले हैं। इसमें हमारी आत्मा का साथी और संगी कोई नहीं है। कोई ऐसा सामान करो जो तुम्हारी आत्मा का संगी और साथी बन सके।

कठिन हैं मोह की धारा, बहा सब जात संसारा ।

जब हम जिस्म का रूप बने बैठे हैं तो जिसम का मोह कुदरती तौर पर है। अब जिस्म के Level से हम सारी दुनिया को देख रहे हैं। तो उसके साथ ही कुदरती बात है, हमें Attachment होगी, मोह होगा। तो कहते हैं, इस मोह की धारा में सारा जहान ही बस रहा है, आलिम भी बह रहे हैं और बेइल्म भी बह रहे हैं। आत्मा जब तक मन के अधीन इन्द्रियों के घाट पर जिसम का रूप बनी बैठी हो, उस वक्त तक ख्वाहे वह आलिम है, या अनपढ़ है, दोनों एक ही हालत में जा रहे हैं। जब तक इन्सान इससे ऊपर न आये, असलियत नज़र नहीं आती है। चीज कुछ और है, नजर कुछ और आ रहा है। सब मोह के बन्धन में बंधे हुये हैं। छज्जू भक्त का जिकर आता है कि उनका यह खासा था कि जब कोई मौत किसी के घर

में हो जाती थी तो वह अरथी के आगे-आगे नाचा करते थे, प्रभु के गुणानुवाद गाते हुये। उनका अपना लड़का गुजर गया। वह आगे-आगे नाचने लगे, जैसा कि उनका दस्तूर था। तो लोग कहने लगे कि आज वह ताल नहीं मिल रहा जैसा कि आगे मिलता था। तो मोह की धार कब टूटती है ? जब हमारी आत्मा मन-इन्द्रियों से रोज-रोज ऊपर आ जाये, हम दुनिया जिसम की नजर से नहीं बल्कि आत्मा की नजर से देखने लग जायें। उस वक्त दोनों हालतों में वह (जो देखते हैं) एक रस कहते हैं ।

हमारे हजूर (श्री हजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज) का जिकर आता है कि एक बार जब वह अपने गुरु बाबा जयमलसिंहजी महाराज से मिलने जा रहे थे, उनका लड़का साथ था जो सख्त बीमार था। जब डेरे (ब्यास) के नजदीक पहुँचे तो रास्ते में एक कुवां था,वहां खड़े हो गये। लड़के को देखा तो वह खत्म हो गया था। हजूर फरमाया करते थे कि उस वक्त मैंने अपने दिल पर कंघी मारी और देखा कि मेरे दिल की हालत क्या है ? तो फर्माते थे कि एक राई मात्र भी कोई असर लड़के के मरने का नहीं था। यह पूर्ण पुरुषों की कैफियत है। कबीर साहब फर्माते हैं कि सब ही मोह की धार में बहे जा रहे हैं ।

घड़ा ज्यूं नीर का फूटा, पतर ज्यूं डार से टूटा।

अब कबीर साहब खोलकर बयान करते हैं कि जैसे एक घड़े में पानी हो, एक-एक कतरा पानी बह रहा हो, आखर एक दिन घड़ा पानी का खाली हो जायेगा। इस तरह हमारे जिसम रूपी घड़े में स्वास रूपी पानी के कतरे दिये गये हैं, प्रारब्ध कर्मों के अनुसार, इतने सांस किसी ने लेने हैं। ''लेखे सास ग्रास।'' हमारे स्वांस और हमारा जो खाना है, वह भी सब ही हिसाब में हैं। जब वह खत्म होते हैं तो हरेक इन्सान को जाना पड़ता है। जो इन स्वासों का जायज (सही) इस्तेमाल कर ले, उसके मुताबिक हमारा जीवन या आयु कहीं लंबी हो सकती है या छोटी हो सकती है। मिसाल के तौर पर आप देखोगे कि साधारण हालत में हम एक मिनट में 14-15 स्वास लेते हैं। अगर हम Passionate जिन्दगी में हों, विषय-विकारी जीवन है, काम-क्रोध के वेग चल रहे हों तो एक मिनट से कोई 28-30 स्वास जाते हैं। उमर आधी हो गई। आपने सुना है, सब कोई कहते हैं, पापों से उमर घटती है। उसका मतलब यही है। संयम का जीवन हो, अभ्यासी जीवन, तो वह एक मिनट में तीन-चार स्वास लेता है, तो तीन गुणा जिन्दगी बढ़ गई कि नहीं ? और योगाभ्यास करने वाला एक-

एक स्वास को चढ़ाकर अन्तर में 60 साल बैठ जाए तो उतनी हजारों वर्ष आयु हो सकती है। मुझे अपनी जिन्दगी में 1930 ई. में सरदार किशनसिंह मिले थे। उस वक्त उनकी उमर 125-30 साल की थी। कहने लगे, दो-दो साल तक मैं कुंभक करके बैठा रहता था, स्वास को चढ़ाकर। उसकी नज़र इतनी तेज थी कि चांद की चांदनी में पढ़ सकता था। उसके दांत बिलकुल नौ बरनौ (नये के समान) थे। सो हमारे जिस्म रूपी घड़े में स्वासों की पूँजी भरी पड़ी है। हरेक दिन, हरेक मिनट, यह खत्म हो रहे हैं, हमें आखरी तबदीली, जिसे मौत कहते है, उसके नजदीक ला रहे हैं। एक महात्मा के पास एक आदमी गया। उनसे कहने लगा, महाराज फलाना आदमी दम तोड़ रहा है। पूछने लगे, अरे भई उसकी कितनी उमर है ? कहने लगा 70 साल। कहने लगे, वह 70 साल से दम तोड़ रहा है। अब तो आखरी दम जो है, वह तोड़ रहा है। तो कबीर साहब फर्मा रहे हैं कि शरीर रूपी घड़े में स्वासों का पानी भरा है, हरेक मिनट कम हो रहा है। इससे फायदा उठा लो, क्योंकि ''गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।'' इसका ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाना चाहिए, पिण्ड से ऊपर आकर अपने आपको जानना चाहिये। दूसरी मिसाल यह देते हैं कि जैसे पत्ता दरख्त से टूट कर गिर जाए तो दुबारा जुड़ नहीं सकता, ऐसे ही यह मनुष्य जीवन हाथ से निकल गया तो फिर जाने कब दुबारा यह जन्म मिले और हम यह काम कर सकें। यह काम मनुष्य जीवन में ही कर सकते हैं, और किसी योनि में नहीं। 84 लाख योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ योनी है। इसमें आकाश तत्व प्रबल है, जिससे यह सत असत का निर्णय कर सकता है। इसीलिये कहते हैं -

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे,
एहलौ जन्म गंवाया ।

महात्मा हमें हमेशा जगाते रहे जगा रहे हैं, और जगाते रहेंगे, कि मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है, इससे फायदा उठाना चाहिये।

ऐसे ही नर जात जिन्दगानी.
अजहूं तू चेत अभिमानी ।

कहते हैं, ऐसे ही हर एक इन्सान की जिन्दगी गुजर रही है। बेहोशी की हालत में जा रही है। अपने आप को नहीं जाना, प्रभु को नहीं पहिचाना, दुनियां को हकीकत की नजर से नहीं देखा, एक बड़े भारी धोखे में जा रहे हैं। तो कहते हैं, ऐ अभिमानी पुरुष, तू किस ज़ोम में जा

रहा है। अब तो जाग ! वक्त गुजरा जा रहा है। Time and tide wait for no man. इससे फायदा उठाओ। उस चीज का सामान करो जो तुम्हारे अपने आपके जानने में और परमात्मा के जानने में मददगार हो। नजर मार के देखो हालत क्या बनी पड़ी है ? सुबह से शाम इसका काम सिर्फ जिस्म को पालना है, या इसके जो ताल्लुकात हैं उनके बनाने में लगा रहता है। आखर यह जिस्म मकान है जिसके हम मकीन (निवासी) है। हम मकान नहीं हैं। यह छोड़ना पड़ेगा। जब Eviction order होगा, हमें यह मकान खाली करना होगा। यहां दुनियां में जब Eviction order होते हैं, लोगों का सामान उठाकर बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसा ही, जब कुदरत का पर्वाना फट जायगा तो जाना पड़ेगा। अब सवाल यह है कि क्या हम आखिरी तबदीली के लिये जिसे मौत कहत हैं, तैयार हैं ? यह जिस्म आत्मा के आधार पर चल रहा है ।

तिच्चड़ वसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल ।

यह जिस्म कब तक आबाद है ? जब तक इसका साथी (आत्मा) इसके साथ है ।

जां साथी उठि चल्लेया तां घन खाकुराल ।

जब इसका साथी, क्या ? आत्मा, इससे जुदा होता है तो इस जिस्म को मिट्टी में मिला दिया जाता है। इस जिस्म की कीमत आत्मा से है, जब वह इससे निकल जाती है तो इसे कौन रखता है ?

आध घड़ी कोऊ न राखे घर ते देत निकार ।

आधी घड़ी भी घर में कोई नहीं रखता है, इसको कहते हैं, जल्दी करो, देर हो रही है। ''काढो काढो होई ।'' यह हालत, इस जिस्म की। जिसके आधार पर यह चल रहा है उसके मुतल्लिक हम कुछ नहीं जानते। अगर कुछ जानते हैं तो वहीं कुछ जो ग्रन्थों-पोथियों में लिखा है। असली तौर पर न हमने देखा न उसका तजरूबा किया। जब जिस्म से निकलना ही नहीं आता तो और क्या करेंगे। वह आँख ही नहीं खुली जिससे वह हकीकत नजर आ सके। हम दुनिया को जिस्म के Level से देख रहे हैं । आत्मा के Level से नहीं ! सारा जगत यह बदल रहा है, मगर हमें सत भासता है। कितना भारी धोखा है, जिसमें दुनियां सारी ही जा रही हैं ।

निरख मत भूल तन गोरा जगत में जीवना थोड़ा ।

कहते है, ऐ भाई, तू बाहर कोई काला है, गोरा है, इसी में बन्धा रहा। काले भी चले जायेंगे, सफेद भी चले जायेंगे। आतिशबाजी का खेल होता है ना, उसमें धोड़े भी बने हुए हैं, मकान भी । किसी मकान की दीवार टेढ़ी है, किसी घोड़े की नाक टेढ़ी है। जब दियासिलाई की तीली लगी, दो-चार मिनट बाहर देकर सब खाक-सियाह हो जायेंगे। यही हालत जिस्मों की है। गोरे-काले, जायदादों वाले, झोंपड़ों वाले, सब आखर जायेंगे। इन सब का खेल इस जिस्म के साथ है। जो बना है वह आखर टूटेगा, जो पैदा हुआ है, एक दिन खत्म हो जाएगा। यह कुदरत का नियम है। जो चीज हमेशा रहने वाली है, वह हमारा अपना आप है, (आत्मा) उसको जानो, उसको पहचानो। जिसने उसको जान लिया, उसको पहिचान लिया वह इस आने-जाने के चक्कर से छूट गया। तो फरमाते हैं, थोड़े समय के लिये यहां रहना है। यह हमेशा रहने की जगह नहीं है। स्वामीजी महाराज फरमाते हैं -

तेरा धाम अधर है प्यारी तू धर संग रहत बंधानी ।

ऐ आत्मा तेरा असल वतन वह है, जहां पर यह धरा, Matter नहीं है। तू कहां की बासी और कहां मिट्टी में और पानी में फंस रही है। तू अपनी जात को पहिचान, अपने निज मुकाम को पहुँच, उसको पा कर हमेशा का आना-जाना खत्म हो जायेगा।

जो घर छड गांवावना तिस लगा मन मांहि ।

ऐ भाई, जो घर तूने छोड़ कर एक दिन गंवा देना हैं, यह जिस्म और बाहरी सामान, वह तेरा दीन-ईमान बना पड़ा है ।

जित्थे जाय तुध वरतना तिस की चिन्ता नांहि ।

जहां पर जाकर तूने हमेशा रहना है, ऐ भाई उसका तुझे कोई फिकर नहीं है। ऐसे पुरुष को अकलमन्द कैसे कह सकते हैं ? वेद भगवान कहता है, उठो जागो, और उस वक्त तक दम न लो, जब तक तुम मन्जिल पर न पहुँच जाओ। 'उठो, जागो' - इसका मतलब है हम कहीं सो रहे हैं। कहां पर सो रहे हैं ? यही मोह-माया के अन्तर ! अपने आपको भूल चुके हैं, जिसम का रूप बने बैठे हैं। यही गुरु अर्जन साहब कह रहे हैं ।

उठ जाग वटावड़ेया तैं क्यों चिर लाया ।

ऐ भाई उठ खड़ा हो जा। तू सो रहा है। तू रस्ते का मुसाफिर है। तेरी आत्मा ने पिण्ड से सफर करके, अण्ड, ब्रह्मण्ड, और पार ब्रह्मण्ड के पार, सत लोक, सचखण्ड जाना है। वह तेरा निज घर है। अरे मुसाफिर, तू क्यों देर कर रहा है। उठ और जाग। यह हमेशा रहने की जगह नहीं है। तू वह काम कर जो तेरी आत्मा के काम आने वाला हो। फिर फर्माते हैं -

भई प्राप्त मानुष देह हुरिया ।

यह जीवन तुझे बड़े भागों से मिला है, क्योंकि -

गोबिन्द मिलन की इह तेरी बरिया ।

उस मालिक के मिलने का यह तेरा वक्त है, It is thy turn to meet God. यह सुनेहरी मौका मिला है। इससे फायदा उठा ले।

अवर काज तेरे किते न काम ।

तू जितने काम भी कर रहा है, वह तेरे काम आने वाले नहीं हैं। तेरे का मतलब तेरी आत्मा से है। कहते हैं, कोई ऐसे काम भी कर, जो तेरे काम आ सकते हैं। वह कौन से काम हैं जो तू कर रहा है, और तेरी जात (आत्मा) ताल्लुक नहीं रखते। यहीं जिस्म-जिस्मानियत के काम जिनमें तू लगा पड़ा है। तेरा सारा वक्त इन्हीं कामों में खर्च हो रहा है। इन्सान जिस्म रखता है, बुद्धि रखता है, और आत्मा रखता है। जिस्मानी लिहाज से हमनें काफी तरक्की कर ली है। सामाजिक और राजनैतिक लिहाज से भी बड़ी तरक्की की है, बुद्धि के हम पहलवान बन गये। बड़ी-बड़ी खोजें की, समुन्दरों को चीरना सीख गये, आसमानों पर उड़ना सीख गये। बड़ी-बड़ी नई ईजादें की, एटम बम बनाये, एक बम चलने से लाखों आदमियों की जिन्दगी खत्म हो सकती है। सब कुछ किया मगर जिसके आधार पर यह दोनों चीजें चल रही हैं, अर्थात् आत्मा, उसके मुतल्लिक हम कुछ नहीं जानते। इन्सान को हरेक लिहाज से तरक्की करना चाहिये। वही इन्सान पूर्ण है जो जिस्म करके, बुद्धि करके और आत्मिक लिहाज से पूर्ण हो गया। तो फरमाते हैं यह मनुष्य जीवन पाकर ऐसे काम कर जो तेरे, तेरी आत्मा के काम आने वाले हैं। वह क्या ?

मिल साध संगत भज केवल नाम ।

किसी अनुभवी पुरुष की संगत करो जिसने आत्मा को मन-इन्द्रियों से आजाद किया है, पिण्ड से ऊपर आकर अपने आपको जाना है, और Overself का परमात्मा का First-hand (व्यक्तिगत) अनुभव किया है। ऐसे पुरुषों की सोहबत में तुम भी अपने आपको जानने के काबिल हो जाओगे । और वह क्या कहते हैं ? कि भई नाम के साथ लगो। नाम वह पावर है जो खण्डों-ब्रह्मण्डों को लिये खड़ी है। नाम दो किसम के हैं, एक अक्षरी नाम, एक पावर (सत्ता), जिसको यह अक्षरी नाम बोध करा रहे हैं, Denote कर रहे हैं । एक Name (नाम) है एक Named (नामी) है जिसका वह नाम है। नामी के बगैर नाम पूरा फायदा नहीं दे सकता है। नाम वह ताकत है। हमने इसके साथ लगना है। बाहरी अक्षरों का नाम उच्चारण पहिला कदम है जिससे चलकर, नाम से चलकर नामी के साथ लगोगे, अर्थात् हमारी आत्मा मन-इन्द्रियों से आजाद होकर ऊपर आयेगी, आखिर जाकर नाम पावर के साथ Contact (जुड़ना) होता है। इसके साथ लगने से कहाँ पहुँचोगे ? जहाँ से वह आ रहा है। वह अनाम से निकला है आप वहाँ पहुंचने के काबिल हो जाते हैं। तो यह दो काम हैं - एक अनुभवी पुरुष की सोहबत-संगत, उसका प्यार, दूसरा नाम पावर से लगना, जिसको शब्द भी कहा है। वेदों ने उसको श्रुति और उपनिषदों ने उदगीत, नाद करके बयान किया है। मुसलमान फकीरों ने उसे कलमा करके कहा है। नाद से 14 भवन बने - वेद ने उसको उदगीत कहा है। नाद कर के भी कहा है। कलमे से 14 तबक बने - एक ही बात दोनों कह रहे हैं। वह नाद या कलमा अक्षर नहीं। मौलाना रूम साहब ने एक जगह उसकी तारीफ़ की है -

ए खुदा बिनुमा मारा आं मुकाम ।
कन्दरो बे हर्फ़ मी रोयद कलाम ।

मौलाना रूम फरमाते हैं, ए खुदा, हमको वह मुकाम बताओ, जहां पर बगैर हरफों के कलाम उग रहा है, वह नाम या कल्मा जो 14 तबकों या भुवनों को बनाने वाला है, उसके मुतल्लिक गुरबानी कहती है -

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड ।
और - नामे ही ते सब जग होवा ।

नाम वह पावर है जो सब खण्डों-ब्रह्मण्डों को बनाने वाली है, और सब को लिये खड़ी है। तो अनुभवी पुरुषों की सोहबत-संगत और नाम से लगना यह दो काम ऐसे हैं जो अपने आपको, आत्मा को, जानने और प्रभु तक पहुँचने में हमारे मददगार हो सकते हैं। इनको छोड़ और जितने काम हैं, वह यहाँ के यहीं रह जायेंगे, उनको हमने सिर्फ बरतना है, ''गुजारे मात्र बरतो इन मांहि।'' असल काम हमारा है, अनुभवी पुरुषों की सोहबत और नाम की कमाई। इसके लिए क्या करना होगा ।

तजो मद, लोभ, चतुराई, रहो निसंक जग मांहि ।

कौन इन्सान है जो असलियत को समझने के काबिल हो सकता है ? कबीर साहब कहते हैं, कि तीन चीजों से आजाद हो, तुमको हर एक चीज अपने असल रंग में नजर आने लगेगी, पहली चीज, मद, नशा कहो कोई हकूमत के नशे में जा रहा है, कोई इलमियत के नशे में जा रहा है, मैं बड़ा आलिम, मैं बड़ा फाजिल हूं। कोई रुपये के नशे में जा रहा है, मैं बड़ा अमीर हूं। मैं जो चाहूं कर सकता हूं। कहते हैं, इस नशे में जो लोग चूर हैं, वह असलियत को असल रंग में नहीं देख सकेंगे, समझ नहीं सकेंगे। ऐसे नशे में चूर पुरुष कभी अनुभवी पुरुष के नजदीक नहीं जाते। वह कहते हैं, हम सब कुछ जानते हैं। तो कहते हैं, इससे आजाद हो, तुम्हारी अकले-सलीम (सुबुद्धि, सुमित) बनेगी, एक चीज को समझ सकेगी। दूसरे लोभ से रहित होकर काम करे। जो इन्सान लोभी है, वह लोभ की ऐनक से हरेक काम को देखता है कि इसमें क्या मिलेगा मुझे। वह यह नहीं देखता कि असलियत क्या है। एक आदमी को नौकर रख लो, उसको पचास रुपये दे दो, जो चाहे कहलाओ उससे। उसी आदमी को एक और आदमी पचास की जगह सौ रुपया दे दे, वह उसी के उलट कहना शुरु हो जायेगा। तो ऐसा पुरुष कब हकीकत को देख सकता है ! तीसरे चतुराई । देखते हुए कि एक चीज गलत है, चतुराई से उसको छिपाना चाहता है, बातें बना कर। एक झूठ को लेकर खड़ा हो गया। दस-बीस, पचास बातें बनाई उसको छुपाने के लिये, चतुराई में लगा पड़ा है, वहां असलियत कैसे नजर आएगी ? कहते हैं कि इन तीनों चीजों से आजाद हो जाओ तो हरेक चीज को असल रंग में देखने के काबिल हो सकता है। ऐसा आदमी बेफिकर सोता है रात को। उसे कोई भय नहीं ।

सजन परिवार सुत दारा,
सभी एक रोज होयें न्यारा ।

कहते हैं, यहाँ पर जितने सज्जन, दोस्त और मित्र, परिवार, बाल-बच्चे, स्त्री सब थोड़ी देर के लिए तुम्हारे साथी हैं, एक दिन छोड़ जायेंगे, या तुम छोड़ जाओगे। प्रारब्ध कर्मों के अनुसार यह यहाँ आकर हमारे साथ बन गये। सब लेने-देने का सामान है। जब लेना-देना खत्म होता है, तो सबको जाना पड़ता है। या तुम या यह तुमको छोड़ जायेंगे। तो फर्मा रहे हैं, कोई ऐसा संगी-साथी तलाश कर जो तेरे साथ रहनेवाला हो। वह कौन है ?

नानक कचड़ेयाँ संग तोड़,
ढूंढ सज्जन सन्त पक्केयां ।

एह जीवन्दे बिछड़े ओह मोयां न जाई संग छोड़ ।

ऐ नानक तू कच्चों का संग छोड़ दे, तू पक्के सज्जनों को तलाश कर। वह कौन ? वह सन्तजन हैं ।

सन्तजन यहां किसी अनुभवी पुरुष के लिए बरता गया है, भेस के लिए नहीं, दुनियां के जितने सिलसिले हैं, बाल-बच्चें, स्त्री, दोस्त, मित्र, ज्यादातर तो गरज के बन्दे हैं। या तो मुसीबत में साथ छोड़ जायेंगे, हद मौत तक साथ देंगे, मगर अनुभवी पुरुष आपका संग-साथ नहीं छोड़ेगा। दुनियां में रहते हुए जंगलों, पहाड़ों, बयाबानों में, हर दम वह आपके साथ है, और संभाल करता है, और अन्त समय जब सब साथ छोड़ जवाब दे जायेंगे, कोई मुसीबत में कोई गरीबी जायेंगे, वह सामने आ खड़ा होता है ।

सच्चा सत्गुर सेब सच सच समालिया ।
अन्त खलोया आए जे सत्गुर अग्गे घालिया ।

वह अन्त समय भी साथ नहीं छोड़ता। जीते-जी पिण्ड को छोड़कर ऊपर कहानी मण्डलों में जाओ तो वह आगे होकर चलता है, मददगार और राहनुमा (मार्गदर्शक) बनकर। या मर कर जाओ, वह साथी और सहायक है शिष्य का, हर वक्त अंग-संग सहाई है। चुनांचे श्री हजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज फ़रमाया करते थे कि मरकर अगर हमने यमों के साथ जाना है तो ऐसे गुरु और नाम दोनों को सलाम है । ❑

हमारे प्रश्नों के उत्तर

(हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज की पुस्तक SPIRITUAL ELIXIR में से)

प्रश्न 1 : एक सत्गुरु की पवित्र भौतिक जिंदगी के दौरान, उसके कितने सच्चे शिष्य उसका कहा मानते हैं ?

उत्तर : इस बारे में कोई संख्या निश्चित नहीं है ।

प्रश्न 2: ईसामसीह ने कहा, ''ध्यान रखो कि आप दान लोगों के सामने ना दो, उन्हें दिखाने के लिए.....अपने बायें हाथ को न जानने दो कि आपका दायाँ हाथ क्या करता है।'' तो फिर शिष्य के लिए सत्संग में दिए गए दान पर अपना नाम लिखना जरूरी क्यों होता है ?

उत्तर : वित्तीय लेखा-जोखा रखने के लिए पूँजी का विवरण रखने की जरूरत होती है। इस उद्धरण का सही अर्थ यह है कि दान देने वाले को अपने दान के लिए स्वयं को कोई श्रेय नहीं देना चाहिए, ताकि अहंकार को बढ़ावा न मिले ।

प्रश्न 3 : 'My Submission' के पृष्ठ 4 के अनुसार ''रूहानियत कुछ और नहीं, बल्कि लोगों की सेवा करना है।'' फिर भी हमें बताया जाता है कि हमारा पहला फर्ज अपने आप के प्रति है । कभी-कभी इसका अर्थ होगा, दूसरों की सेवा करने के लिए अपने आप पर ध्यान न देना। कृपया समझाएँ ।

उत्तर : स्वयं से पहले दूसरों की सेवा करना बहुत उत्तम है। पर अक्सर हमें सेवा का सही अर्थ भी पता नहीं होता और अपने सारे भले इरादों के बावजूद भी हम वास्तव में हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं, उस आवश्यक सेवा की जगह, जिसका हम प्रचार करते हों। जब तक हम अपनी असलियत को नहीं पहचानते, अपने आपको नहीं जानते, हम महसूस करना तो दूर यह सोच भी नहीं सकते कि औरों में भी वही जीवन धारा है, जो कि हममें है और वही धारा सृष्टि में बसी हुई है। इसी वजह से पहले आत्म-ज्ञान पर जोर दिया जाता है और जब यह मिल जाता है तो हम किसी और को नहीं, बल्कि प्रभु को हर जीव में काम करता देखते हैं। 'दूसरों की सेवा' तब एक बिलकुल अलग अर्थ पा जाती है, क्योंकि अब यह प्रभु, जो कि आप में है और आपके चारों ओर है, कि प्रति एक समर्पण बन जाती है, क्योंकि अब आप अपने अंदर बसे इंसान को समझ लेते हैं, तो आप पूरी मानवता को समझ लेते हैं ।

प्रश्न 4 : मैंने हमेशा चाहा है कि मैं दूसरा जन्म लूँ, ताकि मैं इंसानियत की किसी खास तरीके से सहायता कर पाऊँ, जीव रसायन द्वारा या जैव-बागबानी द्वारा या स्वास्थ्य संबंधी या पेड़ों या प्राकृतिक स्रोतों की रक्षा द्वारा। अब हमें जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाने के लिए बताया जाता है, पर इसके लिए मैं बहुत अपर्याप्त और अनिच्छुक महसूस करता हूँ ?

उत्तर : इंसानी जन्म का सबसे ऊँचा लक्ष्य है, अपने आपको जानना और प्रभु को पाना। अगर एक बार हम यह पा लें तो हमारा उद्देश्य पूरा हो जाता है। वह दिव्य प्रक्रिया, जो नामलेवाओं के अगले जन्मों का निर्धारण करती है। वह दिव्य प्रक्रिया, जो नामलेवाओं के अगले जन्मों का निर्धारण करती है, गुरु-सत्ता के हाथों में है, जिसमें कि हमें अपनी सारी उम्मीदें रखनी चाहिऐं । विभिन्न क्षेत्रों में मानवता की सहायता करने हेतु आपकी दयालु भावनाएँ आपको जागृत दृष्टिकोण से धन्य करेंगी, जिससे आपको और अधिक जोश, निष्काम-भाव, और समर्पण भाव से काम करने का प्रोत्साहन मिलेगा। यह सत्गुरु ने देखना है कि वह किस प्रकार आपका सर्वोत्तम उपयोग कर सकता है। एक संत-सत्गुरु समझता है कि एक प्रिय शिष्य को ऐसी अनुशासित जिंदगी जीनी चाहिए कि वह हर रात, स्वयं को सुपुर्द किए गए हर काम को खत्म करके सोए और सिर पर एक कार्यरत गुरु-सत्ता में अपनी सारी उम्मीदें और आकांक्षाएँ रखे। इस प्रकार की पवित्र दिनचर्या आपको मन की शांति प्रदान करेगी और आपकी रूहानी तरक्की में बहुत फायदेमंद होगी।

प्रश्न 5 : क्या मरने से पहले हमारे लिए उन सबको माफ करना जरूरी है, जिन्होंने हमारे साथ ज्यादती की, ताकि हम मृत्यु के बाद उच्चर मंडलों में चढ़ाई कर सकें ?

उत्तर : हमें 'माफ करना और भूल जाना ' का सिद्धांत सीखना चाहिए, जो कि शांति और सौहार्द पाने के लिए जीवन का एक सुनहरी नियम है। यह ध्यान टिकाने में बहुत सहायक होता है और इससे सफल ध्यानाभ्यास का वरदान मिलता है। जो माफ करता है, वह बहुत धन्य है। बदला लेना कायरता है, पर दूसरों की गलतियों को माफ करना सदाचार का कार्य है। नामलेवाओं को सलाह दी जाती है कि सोने से पहले वे अपने कर्मों का जायजा लें कि दिन में काम करते समय, क्या उन्होंने किसी को नाखुश किया है या किसी के साथ नाइंसाफी की है। यदि ऐसा है, तो वे पछतावा करें और दिव्य दया के लिए प्रार्थना करें। इसी प्रकार अगर दूसरों ने, एक या दूसरे तरीके से उनको (नामलेवा को) नुकसान पहुँचाया है,तो उन्हें सत्गुरु के नाम में माफ कर देना चाहिए। बाइबल में एक बहुत अच्छा उदाहरण है,

जिसमें यह कहा जाता है कि जब कोई प्रार्थना में खड़ा हो, तो उससे पहले वह अपने उन भाईयों की कमियों या गलतियों को माफ कर दे, जिन्होंने उसके साथ ज्यादती की, ताकि स्वर्ग में बैठा पिता भी उसकी कमियों को माफ कर दे। स्पष्ट है, हमें अवश्य ही अपनी दैनिक जिंदगी में ऐसी क्षमा भावना का विकास करना होगा। हमें अवश्य ही, इस मृत्युलोक को छोड़ने से पहले, उन सभी को माफ कर देना होगा, जिन्होंने हमारे साथ नाइंसाफी की और यह आंतरिक मंडलों में हमारी आत्मा की तरक्की में सहायक होगा ।

प्रश्न 6 : वो क्या चीज है जो सच्चा सत्गुरु और उससे पवित्र नामदान मिल जाने के बाद, हमें रूहानियत के इस सुनहरी सीधे रास्ते से भटका देती है ?

उत्तर : यह इंसान का अहंकार है, जो उसे आध्यात्मिक जागृति से दूर रखता है। सख्त आध्यात्मिक अनुशासन, पवित्र ध्यानाभ्यास की दिनचर्या और गहरी आदर भरी नम्रता के द्वारा ही इसका नाश हो सकता है। कभी-कभी अप्रिय वातावरण भी प्रिय नामलेवाओं की रूहानी तरक्की पर असर डालता है, हमें सदा सही समझ और दिव्य दया पाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए ।

प्रश्न 7 : भजन-अभ्यास के समय मैं शब्द-धुन कानों में बिना अँगूठा डाले सुनता हूँ। मेरा ध्यान अँगूठों की ओर चला जाता है,पर बिना कानों में अँगूठा डाले, मैं शब्द धुन सुनता हूँ ।

उत्तर : यह आपकी ग्रहणशीलता पर निर्भर करता है कि आप अँगूठों के बिना बेहतर और अँगूठों के साथ मुश्किल महसूस करते हैं। यह लगता है कि शब्द-धुन को सुनते समय आप अँगठों की ओर से चेतन रहते हैं, जो यह दर्शाता है कि आपका ध्यान बँटा रहता है। कृपया यह पक्की तौर से जान लें कि आंतरिक आवाज की धारा आपकी अपनी ग्रहणशीलता का नतीजा नहीं है, बल्कि सतगुरु की दिव्य दया की वजह से है, जिसे प्रेममयी भक्ति और नम्रता से प्राप्त किया जा सकता है। आप एक समय में एकाग्रचित होकर, एक ही अभ्यास को करने की कोशिश करें। जब आप सिमरन-ध्यान (देखने का अभ्यास) पर बैठें और कोई आवाज सुनाई दे तो उस ओर ध्यान न दें, क्योंकि इससे आपको ध्यान बँट जाएगा। इसी प्रकार, जब आप शब्द-धुन को सुनने के लिए बैठें और ज्योति आ जाए तो उस ओर कोई ध्यान न दें। पर अगर आप शब्द धुन दिन में सुनाई देने लगे, तो वह अवश्य आपके ध्यान को व्यस्त रखेगी और इसे दूसरी चीजों में व्यर्थ घूमने से बचाएगी, पर जब भी संभव हो, आप

दायीं ओर से आती शब्द धुन कान बन्द करके सुने, क्योंकि ऐसा करने से आवाज पास आ जाएगी, तीव्र हो जाएगी और अंत में ऊपर से आकर आपकी आत्मा को ऊपर परलोक में खींच लेगी।

प्रश्न 8 : क्योंकि गहरा जामुनी रंग सूक्षम मंडल के एक खंड से जुड़ा है, तो जब हम ध्यानाभ्यास के समय यह रंग देखते हैं, तो क्या हम यह मान सकते हैं कि हम ध्यान में उस मंडल तक पहुँच गए हैं ?

उत्तर : विभिन्न रंगों की पवित्र ज्योति का अंतर में प्रकट होना, जरूरी नहीं, यह दर्शाता हो कि हम उस खास मंडल में पहुँच गए हैं, क्योंकि यह उन मंडलों की सिर्फ परछाई है, जो कि प्रारंभिक मंजिलों में प्रकट होती है। यह अधिक से अधिक शिष्य की आंतरिक आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है ।

प्रश्न 9 : हम किस प्रकार से निष्क्रिय बन सकते हैं और अंतर में पूरी तरह स्थिरता और शांति पा सकते हैं, ताकि हम प्रभु की ज्योति का परमानंद पा सकें ?

उत्तर : रूहानियत के लिए कोई छोटा रास्ता नहीं है। हमें परमानंद के लिए परिश्रम करना होता है। आग की तरह, मन भी एक अच्छा नौकर, पर एक बुरा मालिक है। ध्यान-अभ्यास के समय, हमें मन को सभी विचारों से और बुद्धि को सारे तर्क-वितर्कों से अलग करना होगा। ऐसा मन को पूरी तरह बदल कर ही पाया जा सकता है। आखिरकार इस संसार में हमारा है ही क्या ? कुछ नहीं, यह शरीर भी नहीं, ना ही यह मन और हमारी धन-दौलत। ये हमें वैध प्रयोग के लिए ही मिले हैं। ये देने वाले (प्रभु) की अमानत हैं, तो जब आप उसके द्वारा सौंपा गया कार्य अर्थात् ध्यानाभ्यास करें, तो क्यों न इन सबको सत्गुरु के पवित्र चरणों में समर्पित कर दें ? एकाग्रचित होकर दिव्य चक्षु पर ध्यान टिकाएँ, अंतर में प्रेम से देखते रहें और मन ही मन सिद्ध नामों का जाप करें, बहुत धीरे-धीरे, चाहे रुक-रुककर, ताकि आंतरिक दृष्टि में कोई विघ्न न हो। धीरे-धीरे, लगातार अभ्यास से, यह आपकी आदत और स्वभाव बन जाएगा, ऊपर कार्यरत गुरु-सत्ता आपका ध्यान रखेगी और आपकी बिना किसी कोशिश के, आप स्वयं को देहाभास से ऊपर, उच्चतर किस्म की चेतनता में पाऐंगे। प्रेम, तड़प और भक्ति, प्रभु के रास्ते की कुँजियाँ हैं ।

प्रश्न 10 : भजन-अभ्यास के समय में झिंगुर की आवाज और आमतौर से बाहर सुनी जाने वाली आवाजों को सुनता हूँ । यह क्या हो रहा है ?

उत्तर : झिंगुर का आवाज सबसे निम्न किस्म की आवाज है और आपको बाहरी आवाजों का सुनाई देना यह दर्शाता है कि आप शब्द धुन में पूरी तरह ध्यान नहीं टिका पाते हैं। आप किसी अप्रिय घटना की शंका न करें, क्योंकि ये आपके मन की उलझने हैं जो ऐसा विचार पैदा करती है ताकि आपका ध्यान अंतर से हट जाए ।

प्रश्न 11 : 'नाम' का सच्चा अर्थ क्या है ?

उत्तर : प्रभु 'अनाम' है और जब वह इजहार में आया, तो संतमत की भाषा में उसे 'नाम' (Word) कहा गया । यह प्रकट हुई प्रभु-सत्ता है, जो प्रभु की ज्योति और पवित्र शब्द धुन के रूप में प्रकट होती है और जिसका चेतन अनुभव सत्गुरु द्वारा नामलेवाओं को दे दिया जाता है। विस्तृत व्याख्या के लिए कृपया पुस्तक 'नाम या वर्ड' को देखें ।

प्रश्न 12 : पाँच शब्द क्या हैं ? क्या ये सिद्ध नाम हैं ?

उत्तर : पाँच शब्द अंतर में सुनी जाने वाली विभिन्न प्रकार की आवाजें हैं, जो सच्चखंड तक के विभिन्न रूहानी मंडलों को दर्शाती हैं। वास्तव में पवित्र आवाज या शब्द धुन एक है, पर आंतरिक मंडलों की घनता (Density) के आधार पर यह बदल जाती है। सच्चखंड पूर्णतया चेतन देश है। दूसरे मंडल (पारब्रह्म) में चेतनता अधिक है और माया कम। तीसरे (ब्रह्म) में चेतनता और माया बराबर-बराबर हैं, चौथे मंडल (अंड) में माया चेतनता से अधिक है और पाँचवे मंडल (पिंड) में, माया और भी ज्यादा है और चेतना बहुत कम। पाँच सिद्ध नाम इन मंडलों को दर्शाते हैं ।

प्रश्न 13 : शब्द धुन को सुनना इतना कठिन क्यों हैं ?

उत्तर : शब्द दृश्य और अदृश्य, संपूर्ण सृष्टि में बज रहा है। इंसानी आत्मा और पवित्र शब्द, दोनों एक ही दिव्य तत्व से बने हैं। जो लोग अपनी आंतरिक चेतनता को नियम से, सही तरीके से और सच्चाई से भजन-सिमरन करके बढ़ाते हैं, वे इस ब्रह्मांडीय संगीत को, जब चाहें, सुन सकते हैं। नए भाई-बहन जरूर कुछ मुश्किल महसूस करते हैं, अपने ध्यान को दिव्य चक्षु पर टिकाने में और सावधानीपूर्वक अपने विचारों को शांत करने में। इसके अलावा, जो लोग ज्यादा बोलते हैं और अपनी बेशकीमती शक्ति को व्यर्थ की बातों में नष्ट करते हैं, वे इस दिव्य संगीत को नहीं सुन सकते। यह ध्यान और एकाग्रता से की गई आंतरिक भक्ति हैं जिससे यह परमानंद प्राप्त होता है। दृढ़ता और पक्के इरादे से किया गया अभ्यास उसकी दिव्य दया को जगाता है और नामलेवा पवित्र शब्द धुन को सुन सकता है ।

प्रश्न 14 : शिष्य शब्द धुन के अभ्यास को क्यों छोड़ देता है ? जबकि यह रूहानी तरक्की के लिए इतना जरूरी है ?

उत्तर : प्रभु ने इंसानी मन को ऐसा बनाया है कि यह शांत रहना और अपने ठिकाने, दो आँखों के बीच और पीछे, टिक कर बैठना पसंद नहीं करता है। यह नकारात्मक शक्ति का प्रतिनिधि है, जो कि हर इंसानी आत्मा के साथ जुड़ा है और यह बाहर घूमना पसंद करता है । यह अंतर्मुख नहीं होना चाहता। इसके अलावा, यह इंद्रिय सुखों का प्रेमी है, जिनसे अलग होना आसान नहीं है। यह जिंदा सत्गुरु की दया और संरक्षण है कि वह इस ब्रह्मांडीय संगीत का चेतन अनुभव दे देता है, लेकिन सत्संगी आध्यात्मिक रास्ते के इस सबसे महत्वपूर्ण पक्ष की ओर ध्यान नहीं देते। यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि जो लोग जिस्म-जिस्मानियत के सुखों में उलझे हुए हैं, वे यदा-कदा ही पवित्र रास्ते को अपनाते हैं और अगर संयोग से उनमें से कुछ सत्गुरु तक पहुँचा दिए जाएँ और पुराने कर्मों की वजह से वे नामदान पा जाएँ, तो भी वे इस रूहानी रास्ते को पसंद नहीं करते ।

इंसानी शरीर एक रेडियो के मफिक है, जिसमें हर जीवित इंसान तक ये दिव्य आवाजें आ रही हैं। जिंदा सत्गुरु वह है, जो हमारे खराब रेडियो को ठीक कर देता है और वह स्विच और तरंग Wave length) दे देता है, जिस पर यह दिव्य वाणी सुनी जा सकती हो। नियमत्ता, दृढ़ता और समर्पणभाव से की गई अनथक निष्काम सेवा इस रूहानी विद्या के अभ्यास में बहुत सहायक होते हैं। मन अलग-अलग तरह की धोखाधड़ी खेलकर नामलेवा को शब्द-धुन को सुनने से दूर रखना चाहता है। कभी-कभी यह एक दोस्त होने का नाटक करके शिष्य को उसकी पारिवारिक जिम्मेवारियाँ आदि पूरी करने के लिए फुसलाता है और शिष्य मोह के जाल में फँस जाता है। दूसरे मौकों पर, यह एक जानी दुश्मन के जैसे तेज लड़ाई लड़ने लग जाता है। इसके अलावा सांसारिक सुखों के आकर्षण, मन को लगातार इधर-उधर भटकाते हैं। केवल एक ही स्थान पर यह शांत हो सकता है, वह है आत्मा का ठिकाना या दिव्य चक्षु। शब्द धुन के अभ्यास को छोड़ना इंसानी मन की युगों पुरानी बीमारी है, जिसके इलाज के लिए सत्गुरु की दिव्य दया बहुत जरूरी है।

प्रश्न 15 : लोग कहते हैं कि वे 'सत्य' की खोज में हैं या वे 'सत्य' को पा चुके हैं। महापुरुषों की शिक्षाओं के अनुसार 'सत्य' का क्या अर्थ है ?

उत्तर : महापुरुषों की शिक्षाओं के अनुसार 'सत्य' एक पक्का विज्ञान है। इसे नाम या शब्द कहते हैं। इसका एक व्यावहारिक पक्ष है। यह सार्वभौमिक है और पूरी मानव जाति के

लिए है। यह जीवनकाल में तय किया जाने वाला, प्रभु तक जाने का प्राकृतिक रास्ता है। यह आत्म-विश्लेषण और आत्म-निरीक्षण का तरीका है जिसमें सत्गुरु द्वारा नामदान के समय, लोगों को व्यक्तिगत रूप से या समूह में, उनकी अंतर की आँख और कान खोलकर, उन्हें प्रभु की ज्योति और प्रभु की वाणी या श्रवणीय जीवनधारा से जोड़ दिया जाता है। इस अनुभव की मात्रा इंसान की ग्रहणशीलता और उसकी पृष्ठभूमि पर निर्भर करती है। शिष्य को प्रेम और श्रद्धा से, नियमपूर्वक, रोजाना समय देकर इसे अवश्य बढ़ाना चाहिए ।

प्रश्न 16: 'My Submission' के पृष्ठ 34 के अनुसार सूरत शब्द योग आसान है। मुझे अपना ध्यान पूरी तरह शब्द में टिकाने में काफी मुश्किल महसूस होती है और दूसरों को भी यही मुश्किल आती है। क्या कोई तरीका है जिससे यह मुश्किल दूर हो जाए ?

उत्तर : जब हम कहते हैं कि सूरत शब्द योग आसान है, तो हम तुलनात्मक रूप में इस शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। यह योग के अन्य रूपों के मुकाबले ज्यादा आसान है, जैसे कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग, राज योग, हठ योग, परंपरागत अष्टांग योग,जो कि सभी सख्त और तीव्र बाहरी संयम माँगते हैं और जिनके लिए एक आम व्यस्त इंसान को, आज के इस नीरस संसार में ना तो सब्र और समय है और ना ही ताकत और फुर्सत है। दूसरी और, सूरत शब्द योग का अभ्यास आसानी से हर कोई कर सकता है, पुरुष या महिला, बच्चा या वृद्ध, बराबर की आसानी और दक्षता के साथ। इसकी सहजता और सरलता की वजह से इसे अक्सर सहज योग कहा जाता है। एक समर्थ सत्गुरु द्वारा, अंतर की ज्योति और वाणी का तुरंत सीधा अनुभव दे दिए जाने से, साधक प्रेम और श्रद्धा से, पवित्र रास्ते पर लगातार तरक्की कर सकता है,सत्गुरु के मार्गदर्शन में, जो कि इस रूहानी रास्ते पर अंतर और बाहर, दोनों ओर एक शाश्वत दोस्त और एक अचूक मार्गदर्शन के जैसे कार्य करता है ।

प्रश्न 17 : अगर जिंदा सत्गुरु का एक शिष्य भोजन का परहेज इत्यादि रखता है, लेकिन इस जीवन में शब्द धुन से नहीं जुड़ पाता है, तो क्या उसे और तीन बार जन्म अवश्य लेना होगा, ताकि वह आत्म-ज्ञान पा सके ?

उत्तर : नहीं, उस शिष्य के लिए, जो पवित्र शब्द से नहीं जुड़ पाता है, वापिस आना जरूरी नहीं होता है। पवित्र शब्द धुन जीवन देने वाला तत्व है और हर इंसान में मौजूद है। यह आधारभूत सच्चाई है और इसे बिलकुल भी नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। पर यदि

कोई जिंदा सत्गुरु से मिल जाने के बाद भी इसे नहीं सुन पाता है, तो जरूरी ही तरीके में कोई खामी होगी। आगे जन्म लेने की संभावना को खत्म किया जा सकता है, अगर धीरे-धीरे गुरु-सत्ता के प्रति प्रेम और श्रद्धा का विकास किया जाए और सांसारिक आकर्षणों के प्रति अनिच्छा पैदा की जाए।

प्रश्न 18 : क्या शब्द धुन की तीव्रता में बदलाव हमारी भक्ति और एकाग्रता की मात्रा के अनुसार होता है ?

उत्तर : शब्द धुन की तीव्रता के अंतर इन दोनों में से किसी भी कारण से नहीं होता, बल्कि यह आपकी आंतरिक ग्रहणशीलता पर निर्भर करता है। पवित्र शब्द पूरी तरह सृष्टि में गूँज रहा है पर इसे सत्गुरु की सहायता और दया के बिना नहीं सुना जा सकता। हालांकि एकाग्रचित होकर की गई भक्ति और आंतरिक ध्यान इसमें सहायक होते हैं, पर कोई भी इस दिव्य परमानंद का श्रेय स्वयं की कोशिशों को नहीं दे सकता है,चाहे बाहर से ये कोशिशें कितनी भी सर्वोत्तम क्यों न प्रतीत हों। शब्द धुन को आँखों के पीछे, आत्मा के ठिकाने पर सुना जाना चाहिए, यह पास आ जाएगी, तीव्र हो जाएगी और अंत में ऊपर से आने लगेगी। यदि आप आवाज का पीछा करेंगे, जहाँ से यह आती हो, तो यह हल्की होकर अंत में खत्म हो जाएगी ।

प्रश्न 19 : करीबन तीस मिनट ध्यान टिकाने के बाद आने वाले अँधेरे का कारण क्या है और इसे कैसे खत्म किया जा सकता है ?

उत्तर : विचारों को शांत करना सफलता की कुँजी है। सिद्ध नामों के जाप (सिमरन) की सहायता से अंतर्मुख होने पर, नीचे शरीर से सूरत की धारा सिमटकर दिव्य चक्षु तक आ जाती है। तब शुरु होती है दूसरी प्रक्रिया, जिसे 'ध्यान' कहते हैं। इसके लिए हमें अपनी तवज्जो को आंतरिक दिव्य ज्योति में इतना अधिक टिकाना होता है कि हम स्वयं को पूरी तरह भूल जाएँ। करीबन तीस मिनट बाद महसूस होने वाला अँधेरा आपका ध्यान अंतर में लगातार न टिके रहने की वजह से है। भरसक कोशिश और कठोर आध्यात्मिक साधना के द्वारा ही इंसानी शरीर से मन की मैल को धोया जा सकता है और तब इंसान दिव्य चक्षु पर पवित्र नाम के साथ जुड़ा रह सकता है ।

प्रश्न 20 : क्या निराकार या सूर्य जैसी ज्योति भी सत्गुरु का रूप समझी जाती है ?

उत्तर : हाँ, यह गुरु-सत्ता का सूक्ष्म रूप है और जब हम इसमें दक्षता हासिल कर लेते हैं तो समय आने पर सत्गुरु का आंतरिक नूरी स्वरूप अपने आप प्रकट हो जाता है ।

प्रश्न : 21 क्या यह सच है कि एक शिष्य कम से कम पाँच साल तक ध्यानाभ्यास में कोई रूहानी तरक्की नहीं कर पाता है ?

उत्तर : ऐसा सोचना गलत है कि रूहानी तरक्की कम से कम पाँच साल तक नहीं हो सकती है। जो लोग तैयार नहीं हैं, वे ना तो दयालु जिंदा सत्गुरु के कदमों तक पहुंचाए जाते हैं और न ही वे परलोक के रहस्यों की दीक्षा पाते हैं। जो लोग नामदान पा लेते हैं, वे शुरूआत में ही ज्योति और श्रुति का कुछ अनुभव पा जाते हैं । लेकिन तरक्की पुरानी पृष्ठभूमि के अनुसार अलग-अलग हो सकती है और इस वजह से कुछ तेजी से तरक्की कर लेते हैं, जबकि दूसरे पीछे रह जाते हैं। पर हर एक के लिए उम्मीद अवश्य है । यह एक साधारण लेकिन कठिन दिनचर्या है, जिसे सत्गुरु की दया से बहुत आसान कर दिया जाता है ।

प्रश्न : 22 जब आत्मा का ठिकाना दिव्य चक्षु पर होता है, तो क्या यह सत्गुरु है, जो दिव्य चक्षु पर बैठा होता है ?

उत्तर : नहीं, जब आत्मा दिव्य चक्षु पर पूरी तरह सिमट जाती है, तब पवित्र शब्द धुन के साथ जुड़ा जा सकता है। आत्मा और शब्द धुन दोनों एक ही दिव्य तत्व के बने हैं। सत्गुरु का नूरी स्वरूप कभी-कभी प्रकट हो जाता है, नामलेवा को दिलासा देने के लिए वह उसके साथ है।

प्रश्न 23 : इंसान कैसे अपनी सभी त्रुटियाँ दूर कर सकता है और परिपूर्णता या उसके नजदीक तक पहुँच सकता है ?

उत्तर : इंसान पूर्ण सत्गुरु की छत्रछाया में कठोर साधना, आत्म-संयम और श्रद्धा के साथ नियमित ध्यानाभ्यास अपनाकर, अपने शरीर को सभी त्रुटियों से मुक्त कर सकता है और परिपूर्णता पा सकता है ।

प्रश्न : 24 : यौगिक निद्रा क्या है ?

उत्तर : यह ऐसी निद्रा है, जिसमें आत्मा निचले चक्रों में उतर जाती है और गहरी निद्रा में पहुँच जाती है और कभी-कभी सपने देखती है। यह किसी खास विचार पर ध्यान टिकाने से आती है। सत्गुरु इसका प्रचार नहीं करते हैं और न ही इसको बढ़ावा देते हैं ।

प्रश्न 25 : पुस्तक 'My Submission' में पृष्ठ 34 : ''सत्गुरु की सहायता से रूहानी जिंदगी जीकर हम थोड़े से समय में प्रभु तक पहुँच जाते हैं ।'' क्या आप समझाएँगे कि हमारी व्यक्तिगत जिंदगी में यह 'थोड़ा सा समय' क्या है ?

उत्तर : यहाँ शब्द 'थोड़ा सा समय' का प्रयोग तुलनात्मक रूप में किया गया है। सभी बाहरी कर्मकांड, रीति-रिवाज, भजन,गाना, माला फेरना, व्रत रखना, जागरण करना, योगाभ्यास करना, तीर्थ यात्राओं पर जाना आदि जमीन की तैयारी के लिए हैं और ये सब अच्छे कर्म हैं। भगवान कृष्ण कहते हैं -

''कर्म चाहे अच्छे हो या बुरे, दोनों ही बंधन का कारण हैं, जैसे जंजीर चाहे लोहे की हो या सोने की, वह एक जैसा ही बाँधती है ।''

ये आपको प्रभु के रास्ते से दूर ले जाते हैं, जो कि एक विशुद्ध व्यावहारिक तरीका है, अंतर में आत्म-अनुभव का, जिसमें आत्मा को शरीर और मन से अलग करके अंतर में रक्षक जीवनधारा से जोड़ना होता है, जो कि सीधा हमें प्रभु के साम्राज्य में ले जाती है। ऐसा सिर्फ वह समर्थ पुरुष ही करा सकता है, जो कि परलोक के ज्ञान में निपुण हो और प्रभु द्वारा भेजा गया हो, अन्य कोई नहीं । सत्गुरु में ताकत है कि वह आपकी आत्मा को शरीर में इसके ठिकाने तक खींच लाए और फिर इसे थोड़े से समय में, ध्यानाभ्यास द्वारा, परलोक में ले जाए। मैथ्यू 11:27 के अनुसार : पिता (प्रभु) को कोई नहीं जानता, पुत्र (सत्गुरु) को छोड़कर और वह जिसके सामने पुत्र उसे (प्रभु को) प्रकट करना चाहे। ❑